अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष-39, संयुक्तांक 14-15, 01-31 मार्च, 2016

स्वतंत्रता के लिए एकता जरूरी

ऐसी भारी लड़ाई में जबकि तमाम कौमों को एक दिल होने की जरूरत है, तब किसी गैरजिम्मेदार अथवा पाखण्डी मनुष्य के भला-बुरा बोलने से हिन्दू-हिन्दू या मुसलमान-मुसलमान में झगड़ा पैदा हो, ऐसा नहीं होना चाहिए। इसके लिए मुझे आशा है कि स्वराज्य सभा तथा खिलाफत कमिटी की तरफ से नोटिस निकलेगा कि उनके प्रमाण-पत्र के बिना कोई न बोले। कोई भी आदमी बोलने आये, तो उसे सुनने का आपको अधिकार है, परन्तु आपको पता तो चल जायेगा कि यह किसी संस्था का प्रतिनिधि नहीं है। जिस हुकूमत से हमें लड़ना है, उसका बन्दोबस्त जबरदस्त है। उनमें से कोई आदमी अफसर के हुक्म के बिना न बोलता है, न काम करता है। हममें भी यह शक्ति आनी चाहिए।

हम स्वतंत्र होना चाहते हों तो हिन्दू-मुसलमानों में एकता और साफदिली होनी चाहिए। कोई मुसलमान गफलत से कुछ बोल दे तो हिन्दुओं को उसे बरदास्त कर लेना चाहिए। (नवजीवन, १०.११.१९२०)

—गांधी

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत
सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक

वर्ष : 39, संयुक्तांक : 14-15, 01-31 मार्च, 2016

संपादक
बिमल कुमार
मो. : 9235772595

कार्यकारी संपादक
डॉ.योगेन्द्र यादव

संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह भवानी शंकर 'कुसुम'

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ, साधना केन्द्र
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

मूल्य	:	पाँच रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC No. UBIN-0538353
Union Bank of India

विज्ञापन दर
पूरा पृष्ठ : 2000 रुपये
आधा पृष्ठ : 1000 रुपये
चौथाई पृष्ठ : 500 रुपये

इस अंक में...

1. संपादकीय... 2
2. त्यौहार : प्रयोजन और अभिप्राय 3
3. गांधी और सुभाष की पहली मुलाकात 4
4. ग्राम स्वराज से हिन्द स्वराज 7
5. अबला, सबला और महिला 8
6. अमर वाक्य का शताब्दी वर्ष 10
7. अपसंस्कृति के बढ़ते परिणाम 11
8. हत्या-आत्महत्या या दुर्घटना 12
9. पाँच अरब के बराबर पाँच दर्जन 14
10. भाजपा : कमाल के ऐब 16
11. क्यूबा : बिगड़ी को बनाने का जतन 17
12. खेती 19
13. असम हिंसा की सच्चाई 21
14. विश्व के धर्मों में गोरक्षा 22
15. आगे बढ़ने का ठेठ देसी नुस्खा 25
16. देशद्रोही कौन? 26
17. कुछ अद्‌भुत अनुभूत योग 27
18. असली नमक : सेंधा नमक 28
19. राष्ट्र एवं धर्म के नाम पर फैलाया... 29
20. केला एवं उसके औषधीय गुण 30
21. कदम-कदम पहरे.../इनकी कहानी 32

सम्पादकीय

लोहिया और वैश्विक समाजवाद

समाजवाद के प्रणेता डॉ. राम मोहर लोहिया पहले ऐसे समाजवादी थे, जो राजनीतिक प्रदूषण को समाप्त करने के साथ-साथ एक ऐसा राजनीतिक वातावरण उपस्थित करना चाहते थे, जिसमें सभी का समान विकास हो सके, सभी के लिए रोजी, रोटी का प्रबंध हो, जो दबे-कुचले लोग हैं, उन्हें उनका हक मिल सके, इन्हीं सब भावनाओं के आधार पर कुछ ऐसे प्रस्ताव तैयार किये थे, जिनकी पृष्ठभूमि में वैश्विक कल्याण की भावना सन्निहित थी, वे भावनाएँ बिन्दुवार इस प्रकार हैं—

1. स्त्री-पुरुष समानता—डॉ. राम मनोहर लोहिया ने यह अनुभव किया कि इस विश्व में स्त्री और पुरुष के बीच बहुत अधिक असमानता है, इसको दूर किये बिना एक अच्छे विश्व की कल्पना नहीं की जा सकती है। स्त्री और पुरुष पारिवारिक जीवन के ऐसे दो पहिये होते हैं, जिसकी असमानता से प्रगति प्रभावित हो सकती है, अतः विश्व को यदि तीव्र गति की प्रगति के पथ पर चलना है, तो स्त्री और पुरुष के बीच समानता होना अति आवश्यक है और समानता बिना राजनीति के सही उद्‌भव के बिना नहीं प्राप्त की जा सकती है।

2. रंग-भेद दूर करना—डॉ. राम मनोहर लोहिया ने यह अनुभव किया कि यह विश्व रंगभेद के आधार पर दो वर्गों में बँटा हुआ है, गोरे लोग इस देश के काले लोगों को हीन मानते हैं; उनके ऊपर तरह-तरह के जुल्म करते हैं; उनकी बुनियादी जरूरतें पूरी न हो सकें, इसके लिए नाना प्रकार के जतन करते हैं। अनेक ऐसे कानूनों का निर्माण करते हैं, जो रंगभेद के सिद्धांत का पोषण करते हैं, जब तक यह भावना नहीं समाप्त होगी, तब दुनिया में व्याप्त रंग-भेद की समस्या समाप्त नहीं होगी, जब यह समस्या नहीं समाप्त होगी, तब विश्व को एक सूत्र में नहीं बाँधा जा सकता है, इसे समाप्त करने का सूत्र सिर्फ समाजवाद है।

3. सामाजिक असमानता को दूर करना—डॉ. राम मनोहर लोहिया विश्व समाज में व्याप्त असमानता को देखकर बड़े दुखी थे, समाज का एक धड़ा जिसके पास दुनिया की तमाम चल-अचल सम्पत्ति थी और दूसरा धड़ा को दोनों जन का भोजन भी नहीं मिल पा रहा था। इसे देखकर लोहिया जी की आत्मा रो पड़ती थी। दूसरा बिना असमानता को दूर किये एक स्वस्थ समाज की कल्पना नहीं की जा सकती थी। न ही एक ऐसे विश्व की कल्पना की जा सकती है, जिसमें सभी के लिए समान अवसर हो।

4. जातिगत असमानता को दूर करना—डॉ. राम मनोहर लोहिया ने जब देखा कि भारत के लोग अनेक जातियों में बँटे हुए हैं, उनके बीच में एक ऐसी कटुता ने जन्म ले लिया है, जो दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है। हर एक जाति, दूसरी जाति के हिस्से की रोटी छीनने पर उतारू है। इन सभी विषमताओं और विद्वेष के पीछे जातीय कटुता जिम्मेदार है। जब तक इस जातीय कटुता को समाज से समाप्त नहीं किया जायेगा, तब समाजवाद की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इसलिए डॉ. लोहिया इस जातीय असमानता को दूर करना अपनी प्राथमिकता बनाना चाहते थे।

5.आर्थिक समानता—आर्थिक आधार पर जब हम इस भारत या उत्तर प्रदेश को देखते हैं, तो अमीर और गरीब के बीच में

शेष पृष्ठ 8 पर...

विचार-सौरभ

त्यौहार : प्रयोजन और अभिप्राय

❑ दादा धमाधिकारी

त्यौहारों का सामाजिक स्वरूप

हर त्यौहार का एक सामाजिक प्रयोजन और अभिप्राय होता है। नागपंचमी, दशहरा, दीपावली, ईद और होली इन सभी उत्सवों का कोई न कोई सामाजिक हेतु और उद्देश्य जरूर रहा है। हमें इस इरादे को समझने की कोशिश करनी चाहिए। होली के मतलब की और इरादे को अगर हमने समझ लिया तो उसे आज किस रूप में या कहाँ तक मनाने की जरूरत है, इस बात का निर्णय करने में सहूलियत होगी।

हमारे सारे त्यौहार कौटुंबिक और सामाजिक होते हैं। जो सिर्फ हमारे अपने खानदान के लिए होते हैं, उन्हें 'कुलाचार' कहते हैं। केवल हमारे घर में, हमारे अपने कुटुंब के लिए होते हैं। इनके अलावा कुछ त्यौहार ऐसे होते हैं जो सामाजिक होते हैं, जैसे दशहरा और दीपावली वगैरह लेकिन इनमें भी अक्सर यह पाया गया है कि मनुष्य सारे भेदभावों को, आदमी-आदमी में फर्क करनेवाली सारी बातों को पूरी तरह भूल नहीं सकता। दीपावली में हम अक्सर अपनी बराबरी के लोगों के यहाँ लक्ष्मी-पूजन या पान-सुपारी के लिए जाते हैं। दशहरे में भी हम लोग अपनी श्रेणी के लोगों के घर सोना-चाँदी देने और मिलने-जुलने जाते रहे हैं। तिल-संक्रांत, भुजलियाँ आदि त्यौहारों के लिए भी यही बात लागू है। जहाँ तक खान-पान से सम्बन्ध है, हमारे सारे त्यौहार जात-पाँत की सरहद में सीमित रहे हैं; पर जहाँ खान-पान के अतिरिक्त दूसरे सामाजिक व्यवहार से ताल्लुक है, वहाँ भी वे एक खास श्रेणी या जाति-समूह से बाहर नहीं फैल सके। हर श्रेणी ने अपने-अपने फिरके में अपने-अपने ढंग से त्यौहार मनाये हैं। आज तक यही प्रथा जारी है।

दूसरे त्यौहारों में और होली में एक बुनियादी फर्क है। नागपंचमी के दिन नाग की पूजा होती है। मध्यप्रदेश में पोले के दिन (बैलों की पूजा के त्यौहार पर) वृषभ-पूजन होता है। दशहरे के दिन शस्त्र-पूजा और उपकरण-पूजा यानी हथियारों और औजारों की पूजा होती है। जिसका समाज-सेवा का जो उपकरण हो, उसकी वह पूजा करता है। दशहरे में उत्पादक परिश्रम और रक्षात्मक वीरता का महत्त्व है, इसलिए नयी फसल को ही स्वर्ण या सोना कह कर उसे एक-दूसरे को भेंट करते हैं। दीपावली के त्यौहार में लक्ष्मीपुत्र लक्ष्मीपूजन करते हैं। हमारे यहाँ आमतौर पर लक्ष्मी की प्रतिमा चावल की बनाते हैं और धनियों का प्रसाद बाँटते हैं। संकेत यह है कि धान्य ही असली 'धन' है। धातु 'धन' नहीं।

धूलिवंदन की भूमिका

होली के त्यौहार में शस्त्र-वंदन, उपकरण-वंदन या लक्ष्मीवंदन की जगह धूलिवंदन का महत्त्व है। शस्त्र और लक्ष्मी के कारण मनुष्य को जो कृत्रिम प्रतिष्ठा मिलती है, तलवार और तिजोरी की बदौलत समाज में उसे जो इज्जत मिलती है, उसे भुलाकर मनुष्य को धूलि के समान नम्र होना है। अपनी कारीगरी, कला-कौशल और उद्योगधंधे के सारे अभिमान को ताक पर रख कर उसे छोटे से छोटे और हीन से हीन मनुष्य के साथ घुलमिल कर आमोद-प्रमोद करना है। एक दिन सारे भेदों को भुलाकर निम्नतम श्रेणी के मनुष्य के साथ घड़ी भर मौज करनी है। अपने-अपने सिंहासनों, तख्तों, मंचकों और तख्तपोशों से उतर कर हीन-दीन मानव के साथ बराबरी के नाते धूल में जाकर बैठना है। दूसरे सारे त्यौहारों में अछूत जातियों को शामिल नहीं किया जाता था। वे तो समाज के कँटीले तारों से बाहर ही रह जाते थे। उनके साथ मिलने-जुलने या बैठने-उठने का कोई सवाल ही नहीं था। धूलिवंदन का दिन अछूतों के साथ, मैला साफ करनेवालों के साथ, गंदा रोजगार करनेवालों के साथ मिलने जुलने का दिन था; इसलिए उस दिन गधा भी सवारी के लायक समझा गया।

आमोद-प्रमोद और मनोविनोद के जो साधन ऊपर की श्रेणी के लोगों को मयस्सर होते हैं, वे नीचेवालों को नसीब नहीं होते। वे तो धूल और कीचड़ में ही काम करते हैं। मोरियाँ और नालियाँ, पेशाब-घर और पखाने उनके कार्यालय और कार्यक्षेत्र हैं। उन्हें गुलाल और रंग कहाँ से नसीब हो? जो लोग खुशहाल हैं, वे गरीबों को ये सारी चीजें एक दिन के लिए मुहैया करा दें, तो भी ऊपरवालों को अपना-अपना आसन छोड़कर नीचेवालों की सतह पर आकर उन्हीं के साधनों से होली खेलना मुनासिब समझा गया और धूलिवंदन ही होली का उपलक्षण माना गया। उपलक्षण से मतलब है, किसी प्रथा या व्यवहार के इरादे को समझानेवाली कोई निशानी। धूलिवंदन होली के मतलब को समझानेवाला चिह्न या उपलक्षण है। होली का मतलब यह है कि मनुष्य अपने सारे सामाजिक भेदभावों को भूलाकर सहज भूमिका पर बराबरी के नाते एक-दूसरे के साथ हँसी-मजाक करें, खेलें-कूदें, खुशियाँ मनायें।

हमारे सामाजिक श्रेणी-भेदों के कारण हमारी रोज की बोलचाल की भाषा में भी बहुत बड़ा भेद पड़ गया है। ऊपर की श्रेणियों की भाषा शिष्ट, कुलीन समझी जाती है→

गांधी और सुभाष की पहली मुलाकात

❑ सुजाता

सभी जमीन पर बैठे थे। फर्श पर मोटी-सी खादी की चादरें बिछी थीं। देशी कालीन भी कहा जा सकता है उसे। महात्मा गांधी ने अभी-अभी चरखे पर सूत काट कर बगल किया था। घड़ी की सुई से बँधे उनके एक-एक मिनट होते थे। उनका एक-एक मिनट बेशकीमती था। दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद पूरे देश का भ्रमण और चम्पारण तथा गुजरात में सफल आंदोलन करने के बाद देश उनकी ओर आशा भरी निगाहों से टकटकी लगाए हुए था। महात्मा गांधी ने 1 अगस्त, 1920 को असहयोग आंदोलन आरम्भ करने की घोषणा की। दुर्भाग्यवश उसी समय भारत के एक महान सपूत और महान नेता 'लोकमान्य तिलक' की मृत्यु हो गयी। उसी समय राष्ट्र को अपना समर्थ नेता महात्मा गांधी के रूप में मिला। दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजों को झुकने के लिए मजबूर कर भारतीयों के स्वाभिमान के रक्षक के रूप में पूरा देश महात्मा गांधी के प्रति आकर्षित हो रहा था। उनके शब्दों में जादू था...। पर न तो उसमें लोकलुभावन नारे थे और न जनता से किये गए कोई लंबे-चौड़े वादे...। बस–बस छोटी-छोटी बातें थीं। इनमें सबसे पहली बात थी भूख की...। वे हमेशा सीधी-सीधी और सच्ची बात बोलते थे और सबसे बड़ी बात, उनका आचरण निर्दोष एवं स्वच्छ था। उन्होंने राष्ट्र में नवचैतन्य भर दिया। उनके नेतृत्व में निर्बल स्त्री, पुरुष, बच्चे से लेकर निष्पाप किसान भी अहिंसात्मक लड़ाई के लिए तैयार हो गये थे। अपना सर्वस्व त्याग करके जीवनोत्सर्ग करनेवाले लोग महात्मा गांधी के इर्द-गिर्द ऐसे ही इकट्ठा हो रहे थे जैसे खिले हुए कमल पर गुंजायमान भौंरे...। वह एक दौर था देशभक्ति के जज्बे का, अपना सब कुछ त्याग करने का, देश के लिए जान देने का, पर कुछ लोगों का यह भी ख्याल था कि जान देने के साथ दुश्मनों की जान भी ली जाए।

देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत, त्याग की भावना में निमग्न देश की सर्वोच्च नौकरी सिविल सेवा को ठुकराने का निर्णय लिये, आत्मबल से लबालब चौबीस साल के एक नौजवान सुभाषचन्द्र बोस जोश में भरे इंग्लैण्ड से लौटते ही जब मुम्बई में महात्मा गांधी के पास पहुँचे तो कमरे के दरवाजे पर ठिठक गए।

ठिठकने की वजह थी महात्मा गांधी की सादगी....। फर्श पर ही खादी की मोटी चादर पर गांधी बैठे थे अपने अनुयायियों के साथ...। गांधी के शरीर पर थी घुटने भर की तीन हाथ-वाली खादी की धोती और उतना ही बड़ा एक खादी का टुकड़ा जिसे चादर कह सकते हैं। उन्होंने उससे अपने शरीर का ऊपरी भाग ढँक रखा था। नौ-दस अनुयायी भी पास में बैठे थे जिनके शरीर पर खादी के ही वस्त्र थे।

सुभाषचन्द्र बोस ने अपने शरीर पर पड़े विदेशी कपड़े के बने लिबास को देखा और अपनी नजरें झुका लीं....और कमरे के दरवाजे पर ठिठक कर खड़े हो गए।

पारखी गांधी की पैनी नजरों से कैसे छुप सकता था उनके अंदर के संकोच का भाव। महात्मा गांधी की आँखें स्पष्टतः देख रही थीं कि इस नौजवान ने भले ही अभी विदेशी वस्त्र पहन रखे हैं, भले ही यह अभी अंग्रेजी पोशाक धारण किए हुए है पर यह इसका बाह्य रूप है। इसका अंतर भरा हुआ है इस भाव से कि भारत माता दासता की जंजीर से कैसे मुक्त हो? भारत माता के कष्ट को महसूस कर रहा है, दासता की जंजीर से मुक्ति दिलाने का मन ही मन संकल्प ले चुका है। तभी तो इसने सिविल सेवा के पद को ठुकराकर त्यागमय जीवन की राह पर चलना ठान लिया है।

महात्मा गांधी ने मुस्कुराते हुए उन्हें अंदर आने के लिए कहा। ठिठके पैर उठ तो गए, पर उनकी आँखें महात्मा गांधी पर टिकी थीं। यह ही वह व्यक्ति है जिनकी चर्चा इंग्लैण्ड

→

और नीचे वाली श्रेणियों की भाषा अनाड़ी, गँवारू, अनगढ़ समझी जाती है। आमतौर पर कोई शरीफ आदमी उस भाषा में बात करना भी अपनी शान के खिलाफ समझता है। इसलिए होली के दिन, जबकि वह झाड़ू को, धूलि को और गधे को भी अपनाता है, तो उस दिन वह मामूली आदमी की अशिष्ट भाषा में भी बोलकर उनके साथ अपनी समानता एक दिन के लिए बतलाता है। किसी अभिप्राय से वह निचली श्रेणियों की बोलचाल में सहज आनेवाली गाली-गलौज भी बर्दाश्त कर लेता है। उन्हें अपनी शिष्ट भाषा की अकड़ नहीं दिखाता।

जन-जन की एकता हेतु

मतलब यह कि होली के त्यौहार का इरादा समाज के सभी फिरकों के एक-दूसरे से मिलाने का था। अछूत जातियाँ समाज-वाह्य थीं। सवर्ण जातियों के दायरे से उन्हें बाहर रखा जाता था। ब्राह्मण का भंगी के साथ कभी कोई अप्रत्यक्ष भी सम्पर्क नहीं होता था। यहाँ तक कि ब्राह्मण भंगी का शब्द भी सुनना अपनी मर्यादा के प्रतिकूल समझता था। जैसे ब्राह्मण का भंगी के साथ स्पर्श और सम्पर्क जिस अवसर पर हो सकता था, उसे धूलिवंदन का उत्सव कहा गया। (सर्वोदय, फरवरी 1950 में प्रकाशित लेख का अंश)

प्रस्तुति : बद्रीनाथ सहाय

में हो रही थी, यही वह व्यक्ति है जो अंग्रेजी हुकूमत के लिए पहेली बना हुआ है। यही है हमारे देश का पवित्रतम व्यक्ति... जो देश की आजादी अहिंसा के माध्यम से करने की बात करता है, असहयोग से करने की बात करता है...। अहिंसा के माध्यम से आजादी की बात समझ में नहीं आती... हाँ, असहयोग की बात तो इन्हें भी असरकारक लगती है। इसी कारण सुभाषचन्द्र बोस ने सिविल सेवा की नौकरी को ठुकराते हुए कहा था–''हमें एक स्वतंत्र और स्वाभिमानी राष्ट्र का निर्माण करना है और राष्ट्रनिर्माण का कार्य केवल आदर्शवाद से ही सम्भव है। मुझे लगता है कि यही सही समय है जब हम लोगों को अंग्रेजी सरकार से सारे संबंध तोड़ लेने चाहिए। हर सरकारी कर्मचारी, फिर चाहे वह एक मामूली चपरासी हो या कोई प्रोविंशियल गवर्नर, अंग्रेजी सरकार के भारत में जमे रहने का उत्तरदायी है। किसी भी सरकार को गिराने का सबसे अच्छा तरीका है उससे अपना सहयोग वापस ले लेना। मैं यह इसलिए नहीं कह रहा हूँ क्योंकि यह टॉल्स्टॉय का सिद्धान्त है या गांधी ने इसे अपनाया है। मैं इसलिए कह रहा हूँ कि मैं इसमें विश्वास करने लगा हूँ...।''

असहयोग पर विश्वास करके ही तो सुभाष ने सिविल सेवा को ठुकराया था। वे एकटक देख रहे थे उस महान असहयोगी को जिसने भारत के संपूर्ण जनमानस को लंबी सुप्तावस्था के बाद अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग के लिए खड़ा कर दिया है। महात्मा गांधी के बारे में कैम्ब्रिज के छात्र अक्सर बातें किया करते थे...। कुछ छात्र ऐसे भी थे जो भारत की स्वतंत्रता के प्रति सद्भाव रखते थे। एक फ्रांसीसी ने गांधी के बारे में कहा था कि–''महात्मा गांधी जिन्होंने विश्व सत्ता के साथ अपने को एकाकार कर दिया है। शांत, काली आँखें, छोटा कद, दुबला शरीर, लंबोतरा चेहरा, सूप जैसे कान। माथे पर सफेद टोपी, पहनावे में साफ धुले कपड़े, पैर नंगे। भोजन में भात और फल, पानी के सिवा और कुछ नहीं पीते। लेटते हैं जमीन पर, सोते हैं कम, काम करते रहते हैं लगातार। शरीर की तो जैसे खोज-खबर ही नहीं रखते। उन्हें देखने पर सबसे पहली जो चीज नजर आती है, वह है महान धैर्य और उत्कट प्रेम। उन्हें देखते ही असीसी के संत फ्रान्सिस की याद आ गयी। आदमी सरल शिशु जैसे हैं, अपने विरोधियों के साथ भी मधुर और विनयी, आंतरिकता में कहीं जरा-सा भी खोट नहीं है... ऐसे विचित्र हैं वे।''

परंतु दूसरा दल भी था जो भारत की स्वतंत्रता के प्रति कुभाव रखता था, इनकी खिल्ली भी उड़ाता था। तभी तो जब लोकमान्य तिलक कैम्ब्रिज में भाषण देने आए थे, तो पूरे परिसर में छात्रों के बीच चर्चा का विषय बना हुआ था कि यह व्यक्ति भारत में गरमदल का नेता है। गरमदल के नेता के भाषण में पता नहीं वे छात्र क्या तलाश रहे थे जो तिलक के सौम्यतापूर्ण भाषण में नहीं मिला; सुनकर छात्रों ने ठिठोली करते हुए कहा था–''जब गरम दल का यह हाल है तो नरम दलवाले क्या होंगे? समझ गये कि क्या और कैसे होगा भारत देश आजाद?''

उस फ्रांसीसी मनीषी द्वारा चित्रित यह गांधी सच में वैसे ही हैं; पर क्या सच में देश महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजाद हो पाएगा? सोचते हुए सुभाष बोस ने महात्मा गांधी के कमरे के अंदर प्रवेश किया।

सुभाष बोस ने स्वयं 'इंडियन स्ट्रगल' में लिखा है कि ''मैं 16 जुलाई, 1921 को बंबई पहुँचा और उसी दिन तीसरे पहर महात्माजी से भेंट की। महात्मा गांधी से भेंट करने का मेरा उद्देश्य उस नेता से भेंट करना और उसकी कार्य-योजना की स्पष्ट कल्पना प्राप्त करना था जिसके आंदोलन में मैं भाग लेने जा रहा था। पिछले कुछ वर्षों में मैंने संसार के अन्य क्रांतिकारियों की कार्यविधियों और रणनीतियों का कुछ अध्ययन किया था। अपने ज्ञान और उसी के प्रकाश में मैं महात्माजी के मन और मंतव्य को पढ़ना चाहता था।''

''मुझे आज भी उस दिन का सारा दृश्य बहुत अच्छी तरह याद है। मणिभवन पहुँचते ही, जहाँ बम्बई में आने पर महात्माजी ठहरा करते थे, मुझे एक कमरे में ले जाया गया, जिसमें भारतीय कालीन बिछे हुए थे। दरवाजे के सामने कमरे के ठीक बीच में महात्माजी अपने निकट अनुयायियों से घिरे बैठे थे। सभी घर की बनी खादी के वस्त्र पहने थे। कमरे में प्रवेश करते ही मुझे अजीब-सा लगा क्योंकि सब खादीधारियों के बीच मैं ही अकेला विलायती सूट पहने था। इसके लिए मुझे क्षमा माँगनी पड़ी। महात्माजी ने अपनी निराली और सहृदय मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया और जल्दी ही मेरा संकोच दूर कर दिया। फौरन ही हम दोनों का वार्तालाप शुरू हो गया। मैं हर बात को विस्तार से और स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहता था कि उनकी योजना के कब और कौन से चरण होंगे और योजनानुसार धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए अंत में किस तरह विदेशी नौकरशाही से सत्ता छीन ली जायेगी। इस दृष्टि से मैंने महात्माजी पर प्रश्नों की बौछार करनी शुरू कर दी और वे अपने स्वाभाविक धैर्य के साथ मेरे प्रश्नों का उत्तर देते रहे।''

महात्मा गांधी ने बड़े प्रेम से सुभाष को अपने पास बिठाया, ठीक उसी तरह जैसे पिता अपने योग्य पुत्र को बिठाता है।

सुभाष बोस ने अपने प्रश्न की शुरुआत बड़ी विनम्रता से की–''महात्माजी... मैं आपका बहुत आदर करता हूँ और मानता हूँ कि आप सिर्फ देश की आजादी के लिए ही आवश्यक नहीं हैं वरन् पूरी मानवता को आपकी जरूरत है; परन्तु देश की आजादी की लड़ाई में अहिंसा... कुछ समझ नहीं पाता। आपकी अहिंसा के मायने क्या हैं?''

महात्मा गांधी ने मुस्कुराते हुए कहा–''अहिंसा के भाव से ओत-प्रोत होने के लिए हममें ईश्वर में जीवन्त श्रद्धा होनी चाहिए। फल की तनिक भी आशा किए बिना निरंतर सेवा करते रहने से ही मन में अहिंसा का भाव उदय होता है। इसमें व्यक्ति सिर्फ अपना

अर्पण करता चला जाता है और यह अपना पुरस्कार आप है। निष्काम भाव से की गयी ऐसी सेवा केवल मित्रों के लिए ही नहीं होती, बल्कि शत्रुओं के लिए भी होती है। अहिंसा की यह अनिवार्य शिक्षा है। मुझे तो ईश्वर ने इस मार्ग पर दक्षिण अफ्रीका में डाला जहाँ का वातावरण बहुत प्रतिकूल था। मैं ऐसे देश में था जहाँ न तो किसी यूरोपीय से और न भारतीय से मेरा परिचय था। मैं वहाँ वकालत करने गया था किन्तु वहाँ सीखने को मिल गया मुझे यह शाश्वत नियम की अन्याय और बुराई को दूर करने का एकमात्र उपाय कष्ट सहन है। यही अहिंसा का सिद्धांत है। इसमें हमें चाहे किसी भी व्यक्ति के हाथों मार पड़े उसे हँसते-हँसते सहन करने के लिए तैयार रहना पड़ता है, किन्तु हम कभी किसी व्यक्ति के अहित की कामना नहीं करेंगे, उन लोगों की भी नहीं जिन्होंने हमारे साथ अन्याय किया है। बस इतनी सरल है हमारी अहिंसा... मैं सोचता हूँ जहाँ अहिंसा है वहीं ईश्वर है।''

''महात्माजी, ईश्वर में मेरी जीवन्त आस्था बचपन से ही है। कितनी बार मेरा मन संन्यासी बन जाने का भी करता था। स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं में मैंने अपने जीवन के आदर्श का आधार खोज लिया है। मेरे जीवन का सिद्धांत है 'आत्मनो मोक्षधर्मः जगद्धिताय' जिसके अनुसार अपनी आत्मा की मुक्ति और पीड़ित मानवता की सेवा ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है। मेरा झुकाव आज तक कभी भी क्रांतिकारी आंदोलन की तरफ नहीं रहा... इसलिए नहीं कि मैं आपकी तरह अहिंसा में बहुत अधिक विश्वास रखता हूँ बल्कि इसलिए कि मेरा मानना है कि हमारे लोगों की सच्ची स्वतंत्रता राष्ट्र के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया से गुजर कर ही हासिल हो सकती है, लेकिन इसे हासिल करने का मेरे पास कोई स्पष्ट रोडमैप नहीं था।''

सुभाषचन्द्र बोस और गांधीजी के बीच लगभग एक घंटे तक वार्तालाप चलता रहा। बातचीत के दौरान सुभाषचन्द्र बोस के तेवर में आतुरता थी, परन्तु गांधीजी एकदम शांत लग रहे थे।

एक युवा, जिसकी आँखों में देश की आजादी के स्वप्न तैर रहे थे, एक ऐसे व्यक्ति के पास बैठा था जिसे उसका देश एक तारनहार के रूप में देख रहा था। इस युवा सुभाषचंद्र बोस के मन में भी सैकड़ों सवाल उठ रहे थे जैसे आज सब कुछ जानकर ही दम लेगा...। उसे जानने का हक भी था क्योंकि उसने अपने देश के लिए त्याग किया था। सुभाष बोस आजादी के लिए बेसब्र हो रहे थे, इसी से उन्होंने महात्मा गांधी के सम्मुख प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

सुभाषचन्द्र बोस अति उत्साह में थे, खासकर इस वाक्य से जो महात्मा गांधी ने नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में कहा था कि 'यदि कुछ बातों का यहाँ की जनता पालन करे तो एक वर्ष में भारत स्वतंत्र हो जाएगा?'

सुभाषचन्द्र बोस ने उतावली से कहा– ''महात्माजी, आपके पास अपने कार्यक्रम का कोई ब्लूप्रिंट है जिसमें इस तरह का कोई मैप बनाया गया हो कि एक साल में अंग्रेज कैसे हिन्दुस्तान को छोड़कर चले जायेंगे?''

महात्मा गांधी का उत्तर था, ''मेरे पास कोई ब्लूप्रिंट तो नहीं है...।''

सुभाष बोस ने एक साथ तीन प्रश्न किए–पहला यह कि कांग्रेस ने जो विभिन्न काम हाथ में लिये हैं, उनसे आंदोलन के अंतिम चरण तक कैसे पहुँचा जा सकेगा? दूसरा यह कि सविनय अवज्ञा सरकार को किस तरह इतना मजबूर कर देगी कि वह हमें आजादी देकर खुद मैदान छोड़कर चली जाए और तीसरा यह कि क्या-क्या करने से एक साल में स्वराज्य मिल सकता है?

सुभाष बोस ने स्वयं लिखा है कि उनके उत्तर ने मेरे पहले सवाल का समाधान किया। उन्होंने सदस्य बनाने और एक करोड़ रुपये की निधि जमा करने के लिए जो अपील की थी उसकी अच्छी प्रतिक्रिया हुई थी। इसीलिए वे इस बारे में कुछ न कहकर अपनी योजना की अगली मद पर आ गये अर्थात् विदेशी कपड़े के बहिष्कार और घर की कती-बुनी खादी पर।

महात्मा गांधी ने कहा–''मैं घर-घर खादी पहुँचाना चाहता हूँ। कांग्रेस शांतिपूर्ण तरीके से अभी रचनात्मक कार्य करती रहेगी.. मुझे पता है अंग्रेजी हुकूमत कभी नहीं चाहेगी कि कांग्रेस के रचनात्मक कार्य सफल हों...। पर जब तक वह हम पर चोट नहीं करती है हम रचनात्मक कार्य करते रहेंगे, पर जब वह कांग्रेस पर चोट करेगी तभी सरकार की अवज्ञा करने और जेल जाने का समय प्रारम्भ हो जाएगा। जल्दी ही जेलें इतनी भर जाऐंगी कि उनमें और लोग नहीं समा सकेंगे और फिर आएगा हमारे आंदोलन का अंतिम चरण...।''

''पर महात्माजी, क्या बायकाट आंदोलन से, जो लंकाशायर जैसा बड़ा वस्त्र उद्योग इंग्लैण्ड का है, वहाँ इतना संकट पैदा हो जाएगा कि वे भारत की शर्त मानने को मजबूर हो जायेंगे?''

''मैं मजबूर नहीं कह रहा...''

''मैं समझ नहीं पाया... आप अपने साधन में किसी को मजबूर नहीं करना चाहते तो आपकी अपेक्षा क्या है, मैं समझ नहीं पा रहा...।''

महात्मा गांधी मुस्कुराए, निश्छल मुस्कुराहट। सुभाष चन्द्र बोस ने उनकी आँखों में झाँका... उन आँखों में एक आशा दिखाई पड़ रही थी कि ब्रिटिश सरकार का हृदय-परिवर्तन हो जाएगा और वह भारतीयों की माँगें मान लेगी।

जब वार्तालाप समाप्त हुआ, सुभाषचन्द्र बोस को अपने सभी प्रश्नों का समाधान लगभग मिल गया, पर महात्मा गांधी का अहिंसामूलक आंदोलन उनके गले से नीचे नहीं उतरा...। सहमति और असहमति के द्वंद्व में वे फँसे रहे। गांधी उन्हें देखकर भाँप गए, इसी से उन्होंने सुभाष बोस से कहा–''आप देशबंधु चितरंजन दास से कलकत्ता में भेंट करें, आपको आपकी मंजिल मिल जाएगी।'' ❑

हिन्द स्वराज की दिशा में

ग्राम स्वराज से हिन्द स्वराज

❑ नारायण देसाई

भूमंडलीकरण और ग्राम-स्वराज्य बनाम पूँजी का संस्करण यानी भूमण्डलीकरण आर्थिक साम्राज्यवाद का वह तानाशाही मोहक मायाजाल है जिसने कुटुम्ब की मानव धारणा को विश्व बाजार में पलट दिया है। परिवार का आधार परस्पर विश्वास होता है। बाजार चतुराई से, अविश्वास को व्यवस्था से प्रतिष्ठा दिलवाना चाहता है। भूमंडलीकरण, उदार मतवाद और उपभोक्ता की तिकड़ी राजनैतिक, आर्थिक सत्ता तथा नैसर्गिक संसाधन की बर्बादीवाली भोगवादी सभ्यता पैदा कर रही है। संसार के बड़े भारी हिस्से का यह व्यवस्था शोषण करती है। वहाँ शोषण-दमन करनेवाले अन्य देशों के लोग विद्रोह, स्वार्थ को बलवान कर मानवीय मूल्यों को धूल-धूसरित करने की कोशिश करते हैं। परिवार में आपसी स्नेहभाव, विश्वास, सहयोग बढ़ता है। बाजार में क्रोध, द्वेषभाव एवं गलाकाट वृत्ति बढ़ती है। विश्व बाजार व्यक्ति को स्वार्थी, समष्टि को भेदयुक्त एवं प्रकृति का क्षरण, दोहन, शोषण सुलभ बनाता है। आज की प्रमुख समस्या सुसंवादिता (हारमनी) की है। व्यक्ति की सृष्टि से सुसंवादिता जितनी पुष्ट होगी उतनी ही हमारी स्पष्टता, संवादिता, सम्पन्नता, शांति बढ़ेगी। जिस प्रमाण में समाज की समता छिन्न-भिन्न होगी, प्रकृति की सुसंवादिता में अड़चनें बढ़ेंगी, उतना हमारा अंधविश्वास बढ़ेगा। भूमंडलीकरण तथा उसके साथ चलनेवाले उदारीकरण के भावों ने यही समस्या हमारे सामने खड़ी कर दी है। इस चुनौती का मुकाबला करना आज हमारे पुरुषार्थ की सबसे बड़ी चुनौती है। ग्राम-स्वराज्य का आदर्श इस वैश्विक चुनौती के सामने एक जवाब के रूप में पेश है। मूलतः गांधीजी ने हिन्द स्वराज में जो दर्शन दिया, विनोबा ने भूमि के प्रश्न को लेकर अपने तत्वपूर्ण पुरुषार्थ से निरन्तर उस दर्शन को अधिक ठोस स्वरूप दिया। उस समय और उनके बाद देश के कुछ सेवक तथा कार्यकर्ताओं ने उसे प्रत्यक्ष रूप में कसौटी पर कस के देखा है। समस्या की विराटता तथा प्रयास का शैशव रूप देखकर यह स्पष्ट है कि इस दिशा में अभी लम्बी यात्रा बाकी है।

विषमताओं को स्पर्धा माननेवालों के कारण समाज की संवादिता पर गहरी चोट पहुँची। इसमें समाज का हर व्यक्ति दूसरे का प्रतिस्पर्धी और दुश्मन बन गया। सामाजिक कारणों ने कलह, युद्ध का रूप धारण कर लिया।

विषम तन्त्रों को टिकाए रखने के लिए क्रूर साधनों को अपनाया गया। तकनीकी का विकास इस क्रूरता को घातक एवं विनाशक शस्त्रों की ओर वले गया। नवपूँजीवाद जहाँ नव साम्राज्य के नग्न रूप में नहीं पहुँचा, वहाँ आर्थिक साम्राज्यवाद तो पहुँच चुका है। विकास के भ्रमित खयाल में विश्व समाज को आर्थिक तानाशाही तक पहुँचाया। तानाशाही ने संस्कृति के क्षेत्र में प्रवेश कर लिया, जहाँ रोजमर्रा के जीवन से आरम्भ कर कला, शिल्प आदि क्षेत्रों में विज्ञापनदाताओं की जबरदस्त पकड़ पायी जाती है। विकास की भ्रमित अवधारणा के साथ अत्याधुनिक तकनीकी की आज जो अंधी दौड़ लगाई जा रही है, उसका अधिक खतरनाक असर पर्यावरण पर पड़ रहा है। यह नीचे लिखे कुछ लक्षणों से दिखाई दे रहा है–

1. वसुंधरा की मूल वस्तु जैसे तेल, कोयला, धातुएँ आदि का इस गति के साथ घटना की निकट भविष्य में ही खतम हो जाएँ।

2. पृथ्वी का तापमान बढ़ना। पृथ्वी के आस-पास के ओजोन व्यवस्था में बड़े गड्ढे पड़ना। पृथ्वी की वनस्पति का कल्पनातीत गति से नष्ट होना; आबोहवा में कल्पनातीत परिवर्तन; अतिउष्णता, भयानक सर्दी, हिमप्रपात, बाढ़, हिमनदों का पिघलना आदि। पृथ्वी के तन से जीवन तत्त्वों का शोषण तथा ऊपरी सतह का कृषि योग्य न रहना। परिस्थिति ने मनुष्य के लिए नया विकल्प ढूँढना अनिवार्य बना दिया है। दुनिया के भौगोलिक तथा आर्थिक अलगाव के कारण ये विकल्प अलग-थलग जरूर हो सकते हैं। भारत की वर्तमान परिस्थिति, उसकी हजारों वर्षों की परम्परा, गांधी-विनोबा काल के निकटवर्ती इतिहास को देखकर आज ग्राम-स्वराज्य एक अमोघ विकल्प के रूप में प्रस्तुत होता है।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही गांधी-विनोबा दर्शन, जो पहली बार हिन्द स्वराज में प्रकट हुआ, में विकल्प के आधार दिखने लगे थे। गांधीजी ने देश की अंतिम सत्ता नागरिक की मानी। शासक की नहीं, राजा या शहंशाह की तो हरगिज नहीं। पार्लमेंट या विधानसभा की भी नहीं। आज एक ओर तानाशाही और दूसरी ओर बलात्शाही निष्फल हो गयी है। विकल्प छोटे समुदाय के रूप में प्रस्तुत है, जिसे गांधीजी ने पंचायत कहा, विनोबा ने ग्रामसभा के रूप में परिभाषित किया। ❑

अबला, सबला और महिला

❑ विनोबा

संस्कृत में स्त्री के लिए बहुत शब्द हैं। उनमें से एक है अबला और दूसरा है महिला। अबला के माने हैं दुर्बल, जिसकी रक्षा दूसरों को करनी पड़ेगी। रक्षणीय। और महिला का अर्थ होता है महान, बहुत बड़ी ताकतवाली। इतना उन्नत शब्द, दुनिया की जितनी भाषाओं का मुझे ज्ञान है करीब बीस-पचीस भाषाओं का उनमें किसी में मिला नहीं। इधर अबला भी कहा और उधर महिला भी कहा। मैं पूरे हिन्दुस्तान में घूमा हूँ, पर मैंने अबला समिति कहीं देखी नहीं, महिला समिति देखी है। बहनों ने परीक्षा की है और महिला शब्द चुन लिया है। मतलब स्त्रियों ने तय किया कि हमारी महान शक्ति है, अल्प शक्ति नहीं। 'महिला' शब्द ही बताता है कि स्त्री के बारे में भारत की क्या राय है और क्या अपेक्षा है।

दूसरी बात 'स्त्री' शब्द 'स्तृ' धातु से बना है। स्तृ का अर्थ है विस्तार करना, फैलाना। स्त्री यानी फैलानेवाली, प्रेम को कुल दुनिया में फैलानेवाली। 'स्त्री' शब्द में ही स्त्री का कार्य सूचित किया गया है। प्रेम का विस्तार, प्रेम की व्यापकता स्त्री के द्वारा होगी। स्त्री समाज का तारण करनेवाली, तारिणी शक्ति है।

स्त्री की इतनी शक्ति होने पर भी समाज स्त्री की तरफ किस दृष्टि से देखता है? आज संसार में और परमार्थ में, दोनों में स्त्री टारगेट (लक्ष्य) बनी है। मध्यबिंदु में है। सांसारिकों के लिए वह भोग का लक्ष्य बनी। सारा साहित्य, सारी कला, सारे रस उसी के इर्दगिर्द घूमते रहते हैं। दूसरी ओर परमार्थियों ने उसे लक्ष्य बनाया वैराग्य का। उसे बंधन में डालनेवाली माना और इसलिए उसके प्रति घृणा, तिरस्कार रखा, यहाँ तक कि उसकी तरफ देखना भी गलत माना।

एक दफा मीराबाई वृंदावन गयी थीं। वहाँ एक संत पुरुष थे, जिनका बहुत बोलबाला था। मीराबाई ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। उन्हें लगा कि संन्यासी का दर्शन होगा, तो कुछ बोध प्राप्ति का मौका मिलेगा। लेकिन जब संन्यासी से पूछा गया तब जवाब मिला कि स्वामी महाराज स्त्रियों का मुख दर्शन नहीं करते। यह सुनकर मीराबई ने एक भजन लिखा।

हूँ तो जाणती हती के ब्रजमां पुरुष छे एक,
ब्रजमां रहीने पुरुष रहा भलो तमारो विवेक।

इसमें एक विनोद भरा उपालंभ है कि ब्रज में रहकर भी आपका पुरुषत्व का अहंकार गया नहीं। ब्रज में पुरुष तो एक ही है और जो लोग व्रज में आते हैं वे स्त्रीत्व पुरुषत्व का अहंकार छोड़कर उसकी उपासना करते हैं।

मैंने तो मान लिया है कि स्त्री की दुर्दशा का सारा जिम्मा पुरुषों पर है। मैं तो पुरुष के नाते सारा का सारा जिम्मा उठाने की इच्छा करूँगा। लेकिन इच्छा करने पर

पृष्ठ 2 का शेष...

एक ऐसी खाई दिखाई पड़ती है, जिसको लाँघने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसमें एक वर्ग के पास देश की नब्बे प्रतिशत से अधिक की सम्पत्ति पर अधिकार या कब्जा है, जबकि नब्बे प्रतिशत ऐसे लोग हैं, जिन्हें हर दिन अपने भोजन में से ही कटौती करने को विवश होना पड़ता है।

6.व्यक्तिगत गोपनीयता–डॉ. राम मनोहर लोहिया चाहते थे कि इस देश और विश्व के सभी राजनेताओं के जीवन में इतनी पारदर्शिता हो, जिससे उसके बारे में लोग छोटी से छोटी बातें भी जानते हों, ऐसा उनका अधिकार भी है, जिस व्यक्ति को इस देश पर शासन करने का अधिकार देते हैं, उसकी गोपनीयता का सवाल ही कहाँ उठता है। किन्तु बहुत निजी मसलों में जनता को भी झाँकने की सलाह नहीं देते हैं। हर व्यक्ति की अपनी निजी जिन्दगी होती है, जिसमें किसी को भी दखलंदाजी नहीं करना चाहिए।

7.लोकतांत्रिक अधिकार–इस विश्व के हर व्यक्ति को कुछ लोकतांत्रिक अधिकार मिले हुए हैं, यदि नहीं मिले हैं, तो उन्हें वह लोकतांत्रितक अधिकार मिलना चाहिए। जनता को अपने लोकतांत्रिक अधिकार का उपयोग अपने विकास के लिए करना चाहिए।

8.नागरिक अवज्ञा का अवलंबन–यदि कोई चुनी हुई सरकार मनमानी करती है, अपने वसूलों से भटकती है, ऐसे में सभी नागरिकों को यह अधिकार मिला हुआ है कि वे विनम्रतापूर्वक उस कानून का या निर्णय का विरोध करना चाहिए और इस आंदोलन के माध्यम से उस नागरिक अधिकारों का हनन करनेवाली सरकार को सत्ता से बाहर कर देना चाहिए।

डॉ. राम मनोहर लोहिया ने इसके अलावा भी कुछ ऐसे विचार भी प्राप्त होते हैं, जिनका वर्तमान समय में भारत के सन्दर्भ में उतनी प्रासंगिकता नहीं है। जैसे उपनिवेशवाद का खत्म आदि। इस वैश्विक समाजवाद के बिन्दुओं को निर्धारित करने के पूर्व लोहिया ने तत्कालीन परिस्थितियों का बड़े बारीकी से अध्ययन किया था, अध्ययन के समय जो देश और विदेश को देखने का अवसर मिला था, उसका लाभ देश और दुनिया को समझने के लिए किया था, इसी कारण उनकी समझ भी वैश्विक हो गयी थी, ऐसा प्रतीत होता है।

–डॉ. योगेन्द्र यादव

भी वह हो नहीं सकेगा। क्योंकि दो चेतन वस्तुओं में होने वाले परिणामों का जिम्मा एक पर ही नहीं डाला जा सकता। मैं अगर स्त्री होता, तो सहसा सब पुरुषों को मुक्त कर देता, कहता कि यह सारी जिम्मेवारी मेरी है। अगर मैं जड़ होता, स्त्री या पुरुष की तरह चेतन न होता, तो चुप रहता। पर चूँकि चेतन हूँ, इसलिए अपनी सारी की सारी जिम्मेवारी दूसरों पर डालना कैसे पसंद करूँगा? स्त्रियाँ खुद आगे आयेंगी तभी उनकी शक्ति जाग सकेगी।

वास्तव में शक्ति का जो मूल स्रोत है, वह न स्त्री शरीर में है, न पुरुष शरीर में है। वह अंतरात्मा में है। आत्मा स्त्री-पुरुष भेदरहित है। सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है। परन्तु मनुष्य को भास होता है कि शक्ति हाथ में है, पाँव में है, आँख-कान में है। जब तक आत्मशक्ति का भान नहीं होता तब तक हम लोग अपनी मूल शक्ति को छोड़कर उसके प्रतिबिंब को ही पकड़कर रखते हैं। हाथ, पाँव, आँख और कान में जो शक्ति है, वह तो अंदर की किसी चीज के साथ उसका संबंध होने से है। वह चीज केवल 'शरीर' नहीं है। वह चीज तो है आत्मा की शक्ति। वह आत्मशक्ति हाथ, पाँव, आँख और कान के द्वारा प्रकट होती है। इसलिए जब आत्मशक्ति का भान होता है तब न किसी प्रकार का मोह होता है, न भय रहता है। आत्मशक्ति का भान होते ही मनुष्य पर और कोई सत्ता चल नहीं सकती। उसको परिपूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो जाती है।

स्त्री-पुरुष भेद मानने की मेरी वृत्ति नहीं है। मैं मानता हूँ कि स्त्रियों के सामाजिक, कौटुंबिक, राजनैतिक अधिकार और कर्तव्य वे ही हैं, तो पुरुष के हैं। दोनों में एक ही मानव आत्मा है, इसलिए बाह्य भेद है, उसके कारण दोनों के कार्यक्षेत्र में कुछ थोड़ा फर्क होना स्वाभाविक है, लेकिन उतने आधार पर उस भेदभाव को ठीक नहीं कहा जा सकता, जो आज समाज में मौजूद है।

मेरे अपने मन में तो स्त्री-पुरुष असमानता है नहीं। हमने तो भगवान को भी कहा है *त्वं स्त्री त्वं पुमान् असि। त्वं कुमार उतवा कुमारी* –तुम स्त्री हो, तुम पुरुष हो, तुम कुमार हो, कुमारी भी हो। यह तो ऊपर-ऊपर का आकार भेद है। अंतर में मानव आत्मा तो एक ही है।

स्त्रियों की नाक में, कान में छेद करके उनमें गहने पहनाये जाते हैं, यह सारा ईश्वर के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव है। जन्म के साथ कोई बच्चा गहने पहनकर पैदा नहीं होता। ईश्वर चाहता तो क्या इस तरह नाक, कान के छेद नहीं बना सकता था? ईश्वर ने मोती में भी छेद नहीं रखा। परन्तु हम समुद्र में गोता लगाकर मोती ऊपर लाते हैं, उसमें छेद करते हैं और स्त्रियों के नाक, कान में छेद कर उसमें डालते हैं। उसके नाक, कान, गला, हाथ, पाँव आदि सब में सुवर्ण मोती के गहने पहनाते हैं, तो क्या वहाँ कोलार की पूरी खान इकट्ठा करनी है? पुरुषों ने ही उसके हाथ, पाँव में बेड़ी डाल दी है। वह सुवर्ण की है इसलिए बेड़ी नहीं कहलाती। परिणाम यह हुआ कि वह अकेले बाहर जाने में डरने लगी। पुरुषों ने उसे अपना बैंक ही बना दिया है। इन गहनों का कोई प्रयोजन नहीं है। असम के माधवदेव ने गाया है *कर्णपथे भकतर हियात प्रवेशि हरि* –भगवान कानों के द्वारा भक्त के हृदय में दाखिल होते हैं। कर्ण का भूषण गहना नहीं है, हरिनाम है। मैं गाँव-गाँव घूमता हूँ। गाँवों के सामने कर्जे का बड़ा सवाल होता है। मैं कहता हूँ कि बहनें निकाल दें ये गहनें और मिटा दें गाँव का कर्जा! स्त्री को 'भीरु' कहकर वह पुरुषों के हाथ में सुरक्षित रहे ऐसा हम मानते हैं, यह धर्म-विचार नहीं है। धर्म कहता है कि हर एक में आत्मा है। (विनोबा साहित्य खण्ड 17 स्त्री शक्ति से उद्धृत) (सप्रेस)

समस्या का सही हल : केवल गांधी-विचार

'साम्यवाद' ऐटम बम, हाइड्रोजन बम या स्वार्थवश दी हुई आर्थिक सहायताओं से नहीं दबाया जा सकता और न गांधीवाद के नारे लगाकर, जेल भरकर और गोलियाँ चलाकर ही। पैदा हुई लूटमार को रोकने के लिए आखिर की बात प्रसंगवशात् अनिवार्य हो सकती है; लेकिन वह सरकार की मदद देर तक नहीं कर सकेगी, चाहे सरकार बिलकुल फासिस्ट ढंग की ही क्यों न हो। अगर गांधीजी का मार्ग सचमुच असली तौर पर और पूरी ईमानदारी के साथ नहीं अपनाया जाता, तो साम्यवाद आकर ही रहेगा। उसका आना अनिवार्य है, क्योंकि आधी जागी हुई और गम्भीर तथा लोकपक्षी नेता से विहीन जनता के पास जिस अन्धेरे और अव्यवस्था का विरोध करने के लिए, उसे लोकशाही और सुनियंत्रित विकास के नाम पर आज चल रही है, कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

गांधीजी के मार्ग और मार्क्सवाद में बड़ा फर्क है। लेकिन उससे भी ज्यादा फर्क गांधीवाद तथा अनियंत्रित पूँजीवादी सामंतशाही और जातिशाही व्यवस्थाओं में है। जब तक वे जो आज की व्यवस्था में धन या जाति आदि के रूप में विशेष अधिकारों की स्थिति का सुख भोग रहे हैं उसका त्याग नहीं कर देते, अपनी सम्पत्ति के ईमानदार ट्रस्टी नहीं बन जाते, ऊँच-नीच के भेद-भाव छोड़कर जनता से घुलमिल नहीं जाते, देश की गरीबी के अनुसार अपनी शानशौकत कम नहीं कर लेते, तब तक साम्यवाद और उसके साथ चलनेवाली हिंसा आयेगी ही।

–कि.घ.मशरूवाला

हरिजन,13.05.1950

अमर वाक्य का शताब्दी वर्ष

❑ न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

महाराष्ट्र सरकार ने सन् 2016-17 के बजट में लोकमान्य तिलक द्वारा 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर रहूँगा' उद्घोषणा के सौ साल पूरे होने पर स्मृति में इस साल कुछ खास कार्यक्रमों के लिए पाँच करोड़ की राशि खर्च करने का संकल्प किया है। लोकमान्य तिलक द्वारा यह सिर्फ 'घोषणा' या 'नारा' नहीं था बल्कि वह प्रतिज्ञा भी थी और साथ संकल्प भी था। इसीलिए वह स्फूर्तिदायक मंत्र बना और सारे वातावरण में गूँज उठा जिससे देश पुलकित हो उठा। इस प्रतिज्ञा का उल्लेख कर महात्मा गांधी ने लिखा है कि **''महाराष्ट्र या महाराष्ट्रीयन लोगों के बारे में मुझे विश्वास है कि जिस महाराष्ट्र ने भारतभूमि को त्याग और ज्ञान के पाठ निरंतर पढ़ाए वह महाराष्ट्र गरीबों का 'चरखा और खादी' का कभी भी अनादर नहीं करेगा। 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध हक है' यह मंत्र सिखाकर लोकमान्य तिलक ने भारतवर्ष को श्लोकार्थ दिया। उसी का उत्तरार्ध मैंने, स्वराज्य प्राप्ति का साधन चरखा और खादी है कहकर प्रस्तुत किया है।''**

'महाराष्ट्र' यह साधन स्वीकृत करने के लिए प्रथम स्थान कब लेगा गांधीजी ने यह प्रश्न भी सामने रखा था। खादी गांधीजी के लिए सिर्फ वस्त्र नहीं था। उनके लिए तो वह सम्पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने का अहम साधन था। 'काते सो पहने, और पहने सो काते' इस मंत्र में अद्भुत शक्ति है, ऐसी उनकी मान्यता थी। लोकमान्य के देहान्त पर उनके उत्तराधिकारी गांधीजी ने लिखा था, ''लोकमान्य इज डेड, लाँग लिव्ह लोकमान्य'' (लोकमान्य की मृत्यु हुई लोकमान्य चिरायू हों) इसका मतलब यही था कि उनकी स्वराज्य और स्वदेशी की प्रवृत्ति और वैचारिक प्रतिबद्धता उनके देहान्त के बाद न केवल जीवित रहेगी बल्कि और पनपेगी। मैं मानता हूँ कि महाराष्ट्र शासन की भी यही वृत्ति रहेगी।

आजादी के आंदोलन का नारा था, ''चरखा चला-चलाकर लेंगे स्वराज्य''। आज हमें राजनीतिक आजादी मिल गई। अभी तक हमें 'स्वराज्य' यानी आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, गुलामी से या शोषण से मुक्ति नहीं मिली है। 'लोकमान्य' एवं गांधीजी इसे ही सम्पूर्ण 'स्वराज्य' मानते थे। गांधीजी मानते थे कि ''खादी का एक अर्थ यह भी है कि हम में से हरएक को सम्पूर्ण स्वराज्य और सम्पूर्ण स्वदेशी की भावना बढ़ानी और चिरस्थायी करनी होगी।'' साथ ही इसका प्रयास 'कपास से कपड़ा' तक होगा और यह सम्पूर्ण स्वराज्य और स्वदेशी का कार्यक्रम होगा। गांधीजी ने यह भी कहा था कि **''हमें इस बात का दृढ़ संकल्प करना चाहिए कि हम अपने जीवन की सभी जरूरतों को हिन्दुस्तान में बनी चीजों से और उनमें भी हमारे गाँव में रहनेवाली आम जनता की मेहनत और अक्ल से बनी चीजों के जरिये पूरा करेंगे।''**

लोकमान्य महाराष्ट्र में पैदा हुए थे, इसलिए केवल वहाँ की जनता की भाषा जानते थे। अंग्रेजी के सिवा और कोई अखिल भारतीय भाषा वे नहीं जानते थे। अतः उन्होंने जनता से सम्पर्क स्थापित करने के लिए मराठी भाषा का ही आश्रय लिया। वे थे तो अखिल भारत के, लेकिन उनका निवास स्थान महाराष्ट्र था, इसलिए उन्होंने जनता से सम्पर्क स्थापित करने के उद्देश्य से शिवाजी उत्सव और गणेशोत्सव का आयोजन किया। ये दोनों सार्वजनिक उत्सव थे। इन दोनों उत्सवों के द्वारा उन्होंने महाराष्ट्र की जनता में जागृति का निर्माण किया। हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का आरंभ सांस्कृतिक पुनरूज्जीवन की प्रेरणा में से हुआ है। इसलिए आरंभ में हमारे सारे राष्ट्रीय कार्यक्रम ऐसे ही थे, परंतु वे संकीर्ण या संप्रदायवादी नहीं थे और न ही वह कोई 'इवेन्ट' थे। वह लोक प्रबोधन के कार्यक्रम थे। अंग्रेजी में दो शब्द हैं 'एन्टरटेन्मेन्ट' और 'रिक्रीएशन'। शिवाजी उत्सव या गणपति उत्सव मनोरंज के कार्यक्रम नहीं थे। वे लोकप्रबोधन तथा संजीवन के कार्यक्रम थे। इसीलिए उनका 'स्वराज्य' के आंदोलन में अहम स्थान था। उसमें गुलामी के खिलाफ 'विद्रोह' करने की भूमिका निहित थी।

लोकमान्य तिलक ने अपनी कुशलता से जनता के लिए सुलभ साधन प्रस्तुत किये और जनता की शक्ति के विकास के लिए विधायक तथा प्रतिकारात्मक प्रयोग का आयोजन भी किया। स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षण उस कार्यक्रम के विधायक अंग थे और बहिष्कार प्रतिकारात्मक साधन था। शुरू-शुरू में बहिष्कार केवल विदेशी चीजों के त्याग तक सीमित रहा, परंतु धीरे-धीरे उसका विकास होता गया और आगे चलकर ब्रिटिश शासन के बहिष्कार के रूप में उसकी परिणिति हो गई। इस तरह लोकमान्य ने जनतात्मा की उपासना और आराधना के द्वारा जनशक्ति के प्रयोग के लिए विधायक और प्रतिकारात्मक साधन भी प्रस्तुत किए। उनके आंदोलन न केवल जनता के लिए थे और जनता के नाम पर चलाये जाते थे, बल्कि जनता के आंदोलन भी थे। अतएव लोकमान्य अपने समय के यथार्थ और स्वयंसिद्ध जननायक थे। इसीलिए उनके देहान्त के बाद श्रद्धांजलि अर्पित करते समय अखबारों ने उन्हें 'जनतात्मवासी लोकमान्य' कहकर आदरांजलि अर्पित की थी।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सन् 1920 में जिस दिन लोकमान्य का देहान्त हुआ, उसी दिन गांधीजी के असहयोग आंदोलन की शुरुआत हुई और आगे चलकर गांधी उनके उत्तराधिकारी के रूप में आगे आये और लोकमान्य के मार्ग को उन्होंने अधिक प्रशस्त और लोकसुलभ बनाया। 'ग्रामस्वराज्य' को संपूर्ण 'स्वराज्य' का रूप दिया। आज हमें 'स्वराज्य' के मंत्रद्रष्टा, भारतीय जनता के एकनिष्ठ उपासक और भारतीय लोकशक्ति का उद्बोधन करनेवाले सर्वप्रथम जननेता की स्वराज्य की संकल्पना की प्राणप्रतिष्ठा करनी है। जो आज के युग की माँग भी है और आकांक्षा भी। सही अर्थ में यही 'स्वराज्य' के मंत्रद्रष्टा को वास्तविक आदरांजलि होगी। (सप्रेस)

अपसंस्कृति के बढ़ते परिणाम

❑ किशनगिरि गोस्वामी

आदमी कौन-सा अच्छा होता है?
जिसने घाट-घाट का पानी पिया हो।
लेखक कौन श्रेष्ठ होता है?
जो कई-कई विद्याओं में माहिर है।
अधिकारी कौन-सा योग्य माना जाता है?
जो कई विभागों में नौकरी कर चुका हो।
और नेता कौन उत्तम कहलाता है?
जो कई दलों के दल-दल में सन चुका है।

आज के युग में श्रेष्ठता या सरलता के पैमाने यही माने जाते हैं। हम सांस्कृतिक अस्मिता की कितनी भी बात करें, पर परम्पराओं का अवमूल्यन हुआ है। आस्थाओं का क्षरण हुआ है। आजादी के बाद एक बड़ी भूल हुई कि पहले तो विकास हो जाय, 'सामाजिक-न्याय' बाद में आ जायेगा। यह मान्यता और तर्क गलत साबित हुआ। विकास-फल के बँटवारे पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। आज गाँव व शहर का अन्तर 15 गुना हो गया है। नयी तकनीकी इसी काम में लगी है। जमीन को 'सम्पत्ति' मानकर खरीद-फरोक्त की वस्तु बना दिया गया है। फ्रेंकलिन डॉ. रूजवेल्ट के अनुसार *''एक देश जो अपनी पीढ़ी को नष्ट कर देता है, वह खुद को नष्ट कर लेता है। जंगल हमारी भूमि के फेफड़े हैं। वे हमारी दवा को शुद्ध करते हैं और लोगों को नई ताकत देते हैं।''* हम फिर पश्चिमी विकास को अपना कर बौद्धिक दास और पश्चिम के प्रदूषित उपनिवेश बना रहे हैं। आधुनिक विकास और शहरीकरण के नाम पर हम अपना सब कुछ ध्वस्त करते जा रहे हैं। पहाड़ों की स्थिति हमारे सामने है। मुंबई की 'मीठी नदी' कहाँ विलुप्त हो गयी, पता ही नहीं है। देश के सभी शहरों में पानी निकासी के तंत्र समाप्त कर दिये गये हैं। चीन और दिल्ली की प्रदूषित हवा हमारी अपसंस्कृति की ही देन है।

नियंत्रक तत्त्वों के क्षीण होने से युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित हो रही है। विज्ञापन और प्रसार के सूक्ष्म तंत्र उनकी मानसिकता बदल रहे हैं। अन्ततः इस अपसंस्कृति के फैलाव का परिणाम क्या होगा? यह गम्भीर चिन्ता का विषय है। सीमित संसाधनों का अपव्यय हो रहा है। विकास के अर्थ बदल रहे हैं। सभी को स्वहित की चिन्ता है, परमार्थ पर स्वार्थ हावी हो रहा है। भोग की अतृप्त आकांक्षा आसमान छू रही है। न जाने कहाँ जाकर रूकेगी यह दौड़? समाज में आज वर्गों की दूरी परस्पर बढ़ गयी है। सामाजिक सरोकारों में निरंतर कमी आ रही है। हम लक्ष्य भ्रम से भी पीड़ित हैं। आमजन के लिए मजहब आस्था का विषय है। धार्मिक-राजतांत्रिक सत्ता के लिए वर्चस्व का। मीडिया के लिए रेटिंग व पूर्वाग्रह का तथा भारतीय नेताओं के लिए वोट की बंदरबाँट का। हिन्दू-मुसलमान, पारसी व ईसाइयों के बीच कुछ सांस्कृतिक-वैचारिक भिन्नता हो सकती है। लेकिन ऐसी भिन्नता तो दक्षिणपंथी, वामपंथी, समाजवादी और गांधीवादियों के बीच भी है। क्या वे एक-दूसरे के लिए असहनीय हैं? नहीं। तो क्या दुनिया का कोई मजहब ऐसा भी है, जो दूसरे मजहब को सहन न करने की शिक्षा देता हो? नहीं। तब निश्चित रूप से समझ लेना चाहिए यह अपसंस्कृति दर्शाने के कारण कुछ और हैं।

हैरानी की बात तो यह है कि जब भी इस देश के नागरिक धर्म, सम्प्रदाय, जाति-बिरादरी भूलना चाहते हैं,तभी अचानक एक नेता खड़ा होकर उसके कान के पास घंटी बजा कर कहता है–अरे बावले, तू तो जन्म से सवर्ण है, यह तूने क्या किया? काहे एक अनुसूचित जाति के आदमी को दोस्त बना लिया? इसके साथ क्यों उठता-बैठता है? यही नहीं, तूने तो इसके साथ खाना-पीना शुरू कर दिया। कल बेटे-बेटी के रिश्ते भी बना देगा। जाग, बावले जाग। तब सब कुछ भूलने के कगार पर पहुँचा आदमी सिहर जाता है। इसके बाद भी कोई 'बावला' नहीं समझता, तो उसकी खैर नहीं। इस स्थिति में हमें विदेशी विद्वान स्टर्न की ये पंक्तियाँ याद आती हैं– *''हम पशुओं के धरातल पर न उतर आयें, जिनका परम आनंद उदरपूर्ति और वंशवृद्धि तक सीमित है।''*

कुछ समय पहले राजस्थानी मूल के एक व्यवसायी सुर्खियों में थे, जिन्होंने अपने 700 करोड़ रुपये के आर्थिक साम्राज्य के मोह को त्याग कर संन्यास ग्रहण कर लिया। वे साधु बन गये। दूसरी ओर बाबा रामदेव आयुर्वेदिक औषधियों के अलावा कई तरह के अन्य घरेलू उत्पाद बेच रहे हैं। इस दौड़ में न सिर्फ श्री श्री रविशंकर महाराज आयुर्वेदिक उत्पाद बाजार में पदार्पण करनेवाले हैं बल्कि डेरा सच्चा सौदावाले राम रहीम भी अपने उत्पाद बाजार में उतारने पर उतारू हैं। यानी संत तो व्यवसायी बनते ज रहे हैं और व्यवसायी संत। उधर वरिष्ठ पत्रकार योगेन्द्र यादव आम आदमी पार्टी को मंदिर नहीं, मूर्तियों की दुकान बना रहे हैं। ऐसे में इन्सान किसका अनुशरण करे?

किसी विदेशी पादरी ने गांधी से जब यह जानना चाहा कि कौन-सी बात उनको दिन-रात चिन्तित रखती है? तब गांधी ने कहा था, *''शिक्षित लोगों के अन्दर दया भाव सूख गया है। इस बात से मैं हमेशा चिंतित रहता हूँ।''* यह तब की बात है, जब शिक्षा

शेष पृष्ठ 15 पर...

हत्या-आत्महत्या या दुर्घटना?

❑ चिन्मय मिश्र

पढ़ि पढ़ि के पत्थर भया, लिखि लिख भया जु ईंट।
कहै कबीरा प्रेम की लगी न एकौ छींट। –कबीर

मध्यप्रदेश के दमोह जिले के तेंदूखेड़ा विकासखंड के खमरिया कला गाँव के प्राथमिक विद्यालय की तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले दलित छात्र वीरेन पिता बेडीलाल अहिरवार की पिछले दिनों कुँए में गिरने से मौत हो गई। परन्तु यह घटना इतनी सीधी नहीं है। वीरेन के कुँए तक पहुँचने की कहानी कुछ इस तरह है। वीरेन ने उस दिन मध्यान्ह भोजन योजना के अन्तर्गत भोजन किया और इसके बाद वह पानी पीने के लिए विद्यालय के हैंडपंप पर गया। दलित होने के कारण उसके साथ वहाँ अपमानजनक, छुआछूत व भेदभाव भरा घिनौना व्यवहार करते हुए कुछ शिक्षकों ने उसे वहाँ (हैंडपंप से) पानी पीने से रोका। इस वजह से वह अबोध कुँए पर गया। वहाँ अपनी बोतल को रस्सी से बाँधकर पानी निकालने की प्रक्रिया में कुँए में गिर पड़ा और उसकी मौत हो गई। अब इसे हत्या कहा जाए या आत्महत्या या दुर्घटना! उसका बड़ा भाई सेवक जो कि पाँचवी में पढ़ता है का कहना है कि उसे तो हर दिन इसी तरह कुँए से पानी लाना पड़ता है क्योंकि विद्यालय के हैंडपंप से शिक्षक पानी नहीं भरने देते। अतएव यह सवाल उठना लाजमी हो गया है कि जिन शिक्षकों पर भेदभाव मिटाने का दायित्व है वे ही यदि इसे द्विगुणित कर रहे हैं तो बदलाव कहाँ से आएगा। पिछले दिनों मध्यप्रदेश का विपक्ष एवं मुख्यमंत्री परीक्षा में असफलता के डर से आत्महत्या करने वाले बच्चों को लेकर अत्यंत द्रवित थे। लेकिन इस 'हत्या' को लेकर अभी तक चुप्पी है। यदि कबीर छः शताब्दी पूर्व शिक्षा की परिणति को लेकर इतने चिंतित थे तो सोचिए आज हमारे पढ़े-लिखे वर्ग की मानसिकता वर्ग के करुणाहीन हो जाने से अत्यंत व्यथित थे।

इस घटना को लेकर प्रशासन के भी दो मन्तव्य सामने आ रहे हैं। दमोह जनपद पंचायत के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मनीष बागरी का कहना है, ''सुनकर बड़ी हैरानी हो रही है कि आज के समय में भी खुले तौर पर शिक्षक बच्चों के साथ ऐसा भेद कर रहे हैं। विद्यालय के प्रधानाध्यापक भोजराज लोधी सहित 6 शिक्षकों को तत्काल निलंबित कर दिया गया है।'' लेकिन इसके ठीक उलट दमोह जिला कलेक्टर श्रीनिवास शर्मा ने इस 'दुर्घटना' के पीछे किसी भी जाति आधारित भेदभाव से स्पष्ट इंकार किया है। उनका कहना कि विद्यालय स्थित हैंडपंप पर अत्यधिक भीड़ हो जाने के कारण बच्चे नजदीकी कुँए की ओर रुख करने को मजबूर हुए। लेकिन उन्होंने यह स्वीकार किया कि विद्यालयीन कर्मचारियों से लापरवाही हुई है। इसलिए कार्यवाही प्रारंभ की गई है। परन्तु उन्होंने बिना पूरी जाँच के यह निर्णय दे दिया है कि ''हम इस मामले की विस्तृत रिपोर्ट राज्य शासन को भेज रहे हैं। लेकिन किसी भी तरह का जातिगत भेदभाव वहाँ नहीं हुआ है।'' जबकि प्राथमिक जाँच के दौरान स्थानीय दलित समुदाय के सदस्यों ने, दमोह जिला पंचायत मुख्य कार्यकारी अधिकारी जे.सी. जटिया से स्पष्ट कहा था कि बच्चों को अक्सर शिक्षकों के भेदभाव का शिकार होना पड़ता है। इसे सरकारी कार्यक्षमता व तीव्रता की पराकाष्ठा ही कहा जाएगा कि कनिष्ठ अधिकारियों की जाँच पूरनी होने से पहले ही कलेक्टर महोदय ने जाँच रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी।

डॉ. राममनोहर लोहिया ने सन् 1953 में कहा था, ''जब तक द्विज लोग अपने और शूद्रों के बीच की खाई को लगातार सचेत होकर नहीं पाटते, तब तक उनके यह दोष रहेंगे और देश भी मुर्दा रहेगा।'' यह अत्यंत भयभीत कर देने वाली बात है कि आजादी के इतने दिनों बाद भी जातिवाद का फन उतना ही मजबूत और जहर भरा बना हुआ है। रोहित वेमुला की आत्महत्या भी दलितों के हितों को लेकर संवेदनशीलता पैदा नहीं कर पाई है। इससे भी भयानक बात यह है कि जहाँ पहले ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य ही द्विज थे वहाँ अब कुछ अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) पिछड़े वर्ग के तमाम फायदे लेते हुए कई स्थानों पर द्विजों से भी ज्यादा कट्टरता के साथ दलितों के साथ व्यवहार कर रहे हैं। डॉ. लोहिया ठीक ही कहते थे– *''द्विजों को छोड़कर सारी जातियाँ व्यक्तित्वहीन बना डाली गई हैं और यही वह दलदल है जो सारी भारतीय समाज-व्यवस्था में व्याप्त है। सारा सुधारवादी आंदोलन द्विजों की ही विभिन्न जातियों में होता रहा है, वह भी बुनियादी बातों पर नहीं। सारा का सारा आंदोलन द्विजों के विभिन्न गिरोहों के सिवा किसी भी शूद्र सम्प्रदाय को प्रभावित न कर सका। सारा का सार शूद्र समुदाय निर्जीव व्यक्तित्वहीन बना रहा।''* इसका जवाब भी वह कुछ इस प्रकार देते हैं, ''जहाँ हम यह विचार करते हैं कि पिछड़े वर्गों से नेतृत्व क्यों नहीं निकलता है, तो हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि यह विशाल समुदाय केवल संख्या रह गया है और इसके किसी भी व्यक्ति में व्यक्तित्व

नाम की चीज नहीं रह गयी। यह भारतीय समाज का सबसे बड़ा दलदल है, जिसमें हर आंदोलन समाकर कहाँ गायब होता है, पता भी नहीं चलता और दलदल बना रहता है।'' अब तो यह दलदल सूखने के बजाए बजबजाते सड़ांध भरे मलबे में परिवर्तित होता जा रहा है। दक्षिण भारत और उत्तर भारत में दलितों के नाम पर राज कर रहे राजसी दलितों से क्या किसी सुधार की उम्मीद की जा सकती है?

याद करिए सीरिया और मध्यपूर्व से ग्रीस व यूरोप में शरण लेने जा रहे शरणार्थियों का जहाज डूबने के बाद तीन वर्षीय बालक 'एलन कुर्दी' के ग्रीस के समुद्र तट पर औंधे पड़े शव को। सरसरी निगाह से ऐसा लगता है जैसे कि वह वहाँ रेत में खेल रहा है। परन्तु उस मृत बच्चे की तस्वीर छपते ही पूरे यूरोप में जैसे हाहाकार-सा मच गया और शरणार्थियों को लेकर सभी राष्ट्रीय सरकारों को अपने नजरिए में परिवर्तन लाना पड़ा। परन्तु हमारे यहाँ वीरेन जैसे तमाम बच्चों की मौत किसी भी तरह की सामाजिक बेचैनी को जन्म नहीं दे पा रही है। इसकी वजह क्या हो सकती है? पश्चिम को तो हम अत्यंत असंवेदनशील करार देते हैं, परन्तु हम क्या हैं? गौर करिए पीएचडी कर रहा रोहित वेमुला हो या प्राथमिक कक्षा में पढ़ रहा वीरेन हो। फिर वह चाहे हैदराबाद जैसे महानगर में रहता हो या मध्यप्रदेश के नामालूम से गाँव खमरिया कला में। हमारा बर्ताव सब दलितों के साथ एक सा है अर्थात् कश्मीर से कन्याकुमारी तक (इस मामले में) भारत एक है। इस तरह की घटनाओं से विचलित हो कुछ कहने-लिखने वालों पर गालिब ने ठीक ही तंज किया है।

बक रहा हूँ जुनु में क्या-क्या कुछ,
कुछ न समझे खुदा कर कोई।

यह बात समझ में नहीं आ रही है कि हम अपने बच्चों के प्रति इतने क्रूर क्यों हैं? कहीं वह परीक्षा के भय से आत्महत्या कर रहे हैं तो कहीं पानी के लिए प्यासे ही मर रहे हैं। सच्चिदानंद सिन्हा लिखते हैं, ''हमारे देश में जाति-प्रथा इतने दिनों तक टिकी रही। इसका कारण विभिन्न समुदायों का स्तर परिवर्तन और फिर भी समुदाय का कायम रहना भी है। इस गजब की लोच के कारण ही यह बहुलांश शुद्ध अछूत रहा और अल्पांश द्विज रहा। अपने से उच्च जाति के लिए द्वेष फैलाना और नीचे वाले को दुलत्ती लगाना यह अजगर (अहीर, जाट, गुर्जर, राजपूत) या इसी सरीखी जातियों का पुराना काम है और यही काम या भावना अपनी जाति नीति की सफलता में सबसे बड़ी बाधा है।'' पिछले दिनों गुर्जर, पाटीदार व जाट आंदोलन उपरोक्त कथ्य को पूरी तरह से सत्यापित करते हैं।

परन्तु दुःखद बात यह है कि भारत के गाँवों के विद्यालय व आँगनबाड़ी भी इस जातिगत भेदभाव को और मजबूत बना रहे हैं। विगत वर्ष बुंदेलखंड में पलायन के कारणों का अध्ययन करते समय भीतरी इलाकों में जाने पर पता चला कि वहाँ पर जातिगत भेदभाव अभी भी अपनी पूरी भयावहता से व्याप्त है। कौन बच्चा किसके हाथ का बना खाएगा और किसके हाथ का नहीं, यह जाति के हिसाब से तय है। संविधान को लेकर तमाम बहस करने वाले और राष्ट्रवाद व देशप्रेम के नाम पर शासन या विरोध करने वाले दोनों ही अपने-अपने हिस्से के 'पाप' से बच नहीं सकते हैं। मध्यप्रदेश सरकार अभी जापान के नागरिकों के लिए इंदौर के पास अत्याधुनिक बसाहट बनाने पर तुली है लेकिन वह भूल जाती है कि मध्यप्रदेश के इस सबसे विकसित जिले के गाँवों में दलितों को कुँए से पानी लेने के लिए सन् 2016 में भी कलेक्टर को हस्तक्षेप करना पड़ता है। इस सबके बीच बच्चों के बारे में तो सोचने की किसी को फुरसत ही नहीं है। ❑

देवभूमि की रक्षा हेतु प्रार्थना

धरती माँ!

आपने पावन हिमालय और गंगा-यमुना सहित इस पुनीत भारत भूमि को ऋषि-मुनियों की कठिन तपस्या द्वारा मानवता के लिए रजोगुण, तमोगुण से हटकर सतोगुण पर चलने की राह तैयार कराई है। इसके लिए प्रेम-बन्धुत्व, त्याग, समर्पण वाला 'रामराज्य' का प्रत्यक्ष दर्शन कराया। साथ ही स्वार्थ, कपट, दुर्व्यसन, फूट, नशा से पतन द्वारा सदियों गुलामी का सबक भी दिया।

आपने ही सत्य, अहिंसा, प्रेम, बन्धुत्व का मंत्र देकर अपने दूत महात्मा गांधी द्वारा गुलामी से मुक्ति तो दिला दी किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही अपने दूत को तुरन्त वापस बुलाकर भारत भूमि फिर फूट, द्वेष, कलह की चुनावी दलबंदी और कभी शान्त न होने वाली भौतिक भूख (किसी भी तरह पैसा कमाने, जिस जनता की भलाई के लिए सरकारें बनी हैं वही सरकार पैसा कमाने हेतु जनता को सर्वनाशक शराब, बीयर के कुंड में झोंक रही है) के भँवर में फँस गयी।

आपने ही आस्था का केन्द्र, इस कठिन पर्वतीय देवभूमि के सरल, शांत निवासियों को इसकी पवित्रता बनाये रखने का भार सौंपा है, जबकि जिम्मेदार लोग और सरकार पैसों के लोभ से अपनी जिम्मेदारी भूल गये हैं।

हमने सुना है कि जिन बच्चों के अभिभावक गैर जिम्मेदार होते हैं धरती माँ उन पालकों को ही विवेकशील, सद्गुण-सम्पन्न बना देती हैं। हम विश्वासपूर्वक आशा लगाये हैं कि आप हमारी मातृशक्ति, युवाशक्ति और भावी संतानों को शक्ति, साहस और विवेकसम्पन्न बनाकर देवभूमि को दुर्व्यसन, कृत्रिमता, फजूल खर्ची, आपसी भेदभावों से बचाकर सात्विक, सदाचार, सेवा-प्रेम युक्त पावनता प्रदान करेंगी।

–शशिप्रभा एवं मानसिंह रावत

पाँच अरब के बराबर पाँच दर्जन

❑ मार्टिन खोर

हाल के समय में आमदनी और संपत्ति में बढ़ती असमानता महज अकादमिक विषयों तक सीमित न रहकर वैश्विक एजेंडा बन चुकी है। दुर्भाग्यवश यह मुद्दा अभी नीतिगत विमर्श में फँसा हुआ है, जबकि इस दिशा में तुरंत निर्णय लिये जाने की आवश्यकता है। धरातल पर देखें तो नजर आता है कि अमीर-गरीब के बीच की खाई, अमीरों द्वारा की गयी अतियाँ और मध्य या निम्न वर्ग की स्थिर या बदतर होती स्थिति के मद्देनजर विशेषतः पश्चिमी देशों में बहुत से विवाद एवं विरोध प्रदर्शन हुआ है। पिछले दिनों दावोस में संपन्न हुए विश्व आर्थिक फोरम में ऑक्सफेम की असमानता पर जारी रिपोर्ट को फोरम के सभागृहों में वैश्विक श्रेष्ठी वर्ग द्वारा व्यक्त किये जा रहे विचारों से ज्यादा मीडिया-प्रमुखता मिली। ऑक्सफेम के अनुसार विश्व के समृद्धतम 62 (बासठ) अरबपतियों के पास विश्व के निर्धनतम आधी जनसंख्या के बराबर की संपत्ति है। गौरतलब है सन् 2010 में विश्व के 358 समृद्धतम व्यक्तियों के पास निर्धनतम 50 प्रतिशत जितनी संपत्ति थी। सन् 2014 में यह संख्या घटकर 80 और सन् 2015 में महज 62 पर आ गयी है। इतना ही सन् 2010-15 के दौरान निर्धनतम लोगों की संपत्ति में 41 प्रतिशत की कमी आयी है जबकि 62 समृद्धतम व्यक्तियों की संपत्ति 500 अरब डॉलर से बढ़कर 1.76 खरब डॉलर (तकरीबन तीन गुना) हो गयी है।

अनेक देशों में बढ़ते सामाजिक असंतोष के चलते राजनीतिज्ञों, धार्मिक नेताओं, अर्थशास्त्रियों एवं पत्रकारों का ध्यान इस स्तंभित कर देने वाली असमानता की ओर गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने असमानता को 'हमारे समय को परिभाषित करनेवाली चुनौती' की संज्ञा दी है। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव प्रक्रिया में डेमोक्रेटिक पार्टी के एक प्रमुख प्रत्याशी बेरनी सांड्रेस ने उजागर किया है कि अमेरिका के सर्वोच्च 0.1 प्रतिशत लोगों के पास वहाँ के निम्नतम पायदान पर रह रहे 90 प्रतिशत व्यक्तियों जितनी संपदा है और उन्होंने कहा है कि वे ''कारपोरेट अमेरिका और वालस्ट्रीट के लालच से टकरायेंगे तथा मध्यवर्ग के संरक्षण हेतु संघर्ष करेंगे। पोप फ्रांसिस का कहना है असमानता सामाजिक बुराई की जड़ है और उन्होंने उन्मुक्त बाजार और छनकर (ट्रिकल डाउन) नीचे आने वाले सिद्धांतों की निंदा की है। जोसेफ स्टिग्लिट्ज और थामस पिकैटी जैसे उल्लेखनीय अर्थशास्त्रियों ने हाल ही में असमानता पर प्रकाश डाला है और दोनों ने इस विषय पर प्रसिद्ध पुस्तकें लिखी हैं।

एक अन्य अर्थशास्त्री रॉबर्ट शिलर ने सन् 2013 का नोबल पुरस्कार लेने के बाद चेतावनी दी थी कि ''आज की सबसे बड़ी समस्या अमेरिका और विश्व में बढ़ती असमानता है।'' इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि असमानता न सिर्फ अन्यायपूर्ण है बल्कि यह लोकतंत्र एवं सामाजिक स्थायित्व को एक गंभीर खतरा है। वाशिंगटन प्रोग्रेस ने बताया है कि सन् 1983 से 2010 के दरम्यान अमेरिका के सर्वोच्च 20 प्रतिशत परिवारों की औसत संपदा में 120 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि 20 प्रतिशत मध्यवर्ग की आय में 13 प्रतिशत की वृद्धि तथा निचले पायदान पर रह रहे 20 प्रतिशत परिवारों की संपत्ति के बजाय ऋण में वृद्धि हुई और शुद्ध संपदा में कमी आयी। एक सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि निम्नतम 5 प्रतिशत भवन स्वामी सन् 2007 एवं 2010 के मध्य अपनी 94 प्रतिशत संपदा गँवा बैठे। प्रमुख पत्रकार मार्टिन वोल्फ ने हाल ही में फाइनेंशियल टाइम्स में ''आर्थिक नुकसान उठानेवालों का श्रेष्ठी वर्ग के प्रति विद्रोह'' शीर्षक से एक लेख में बताया कि जिन लोगों को वैश्वीकरण (पश्चिमी) (जनसंख्या का एक बड़ा वर्ग) से लाभ नहीं पहुँचा वह स्वयं को बहिष्कृत पाते हैं और श्रेष्ठी वर्ग से नाराज हैं। इसी के परिणामस्वरूप फ्रांस और अमेरिका में दक्षिणपंथी राजनीति को लोकप्रियता मिल रही है जो कि शरणार्थी विरोधी लहर पर सवार हैं। वोल्फ ने चेतावनी दी है कि मनोमालिन्य की इस प्रवृत्ति को रोकने में हम पहले ही देरी कर चुके हैं। दक्षिणपंथी राजनीतिज्ञों के उदय को लेकर चिंतातुर वोल्फ अपनी जगह ठीक हैं लेकिन इसके विपरीत धारा भी प्रचलन में है। ग्रीस, स्पेन और तमाम अन्य स्थानों पर सरकारों द्वारा लिये गये मितव्ययिता संबंधी निर्णयों से जनता का मोहभंग हुआ है। फलस्वरूप विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं और वामपंथी मितव्ययिता विरोधी आंदोलनों एवं राजनीतिक दलों का उदय हो रहा है।

अमेरिका में इस बात को लेकर नाराजगी है कि किस तरह रूढ़िवदी राजनीतिक श्रेष्ठीवर्ग ने हाल के दशकों में अमीरों और कॉरपोरेट के करों को कम करने हेतु उपाय किए एवं निम्न आयवर्ग को लाभ पहुँचाने वाले कल्याणकारी कार्यक्रमों में कमी की। अधिकांश पश्चिमी विश्व इस वक्त द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उठाये गये कदमों को लेकर एकमत था। इसके अनुसार बाजार को रोजगार एवं संपदा उत्सर्जित करना चाहिए। साथ ही सरकार की इस मायने में महत्त्वपूर्ण भूमिका

है कि संपन्नों पर कर लगाये और इस आमदनी का पुनर्वितरण यह सुनिश्चित करने हेतु किया कि गरीबों का ध्यान बेरोजगारी एवं सामाजिक लाभों के माध्यम से रखा जाएगा। सरकार भी निम्न वृद्धि दर एवं मंदी के दौरान इस दुष्चक्र से निकलने हेतु हस्तक्षेप करे एवं अपने खर्चों में वृद्धि कर माँग एवं रोजगार में बढ़ोत्तरी लाये। रीगन-थैचर क्रांति ने इस सहमति को छिन्न-भिन्न कर दिया। उनकी इस नयी 'परस्पर निष्ठा' के हिसाब से अमीरों और कारपोरेट पर कर कम किये जायें जिससे कि निवेश पैदा कर सकें। कल्याणकारी लाभों में या तो कमी लायी जाये या इन्हें रद्द कर दिया जाये जिससे कि गरीब इनका दुरुपयोग न कर पायें। सरकार का वित्तीय भार कम हो और सरकार अर्थव्यवस्था में भागीदारी न करें और बाजार को कार्य करने के लिए छुट्टा व अकेला छोड़ दे। इस नयी परंपरानिष्ठा को व्यापक तौर पर प्रभावशील बनाया गया और इसमें वे विकासशील देश भी शामिल हैं जो कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं विश्वबैंक की ढाँचागत समायोजन नीतियों का अनुपालन करने की वजह से ऋण संकट में उलझ गये थे।

बहरहाल सन् 2007-11 के वैश्विक वित्तीय संकट एवं आगामी आर्थिक मंदी की आशंका के चलते सरकारी हस्तक्षेप वाली कीन्स की नीतियाँ पुनः लोकप्रिय हो गयीं। अनेक अर्थशास्त्रियों एवं संस्थानों का विश्वास है कि आर्थिक विकास में कमी या मंदी का कारण व्यापक माँग में कमी आना है। इसका एक कारण बढ़ती असमानता है। माँग में वृद्धि के लिए आवश्यक है कि समानता को प्रोत्साहित किया जाये। जब आमदनी का प्रवाह गरीबों की ओर होगा तो माँग में वृद्धि होगी क्योंकि गरीब बजाये अमीर के अपनी आय का ज्यादा हिस्सा खर्च करता है। सन् 2012 में ओबामा की आर्थिक सलाहकार परिषद की पीठ के सदस्य एलन क्रुईगर ने रिपोर्ट के निष्कर्ष में कहा था असमानता का एक विकृत प्रभाव यह है कि इसकी वजह से आमदनी अमीरों की ओर हस्तांतरित हो जाती है जो कि प्रत्येक अतिरिक्त डॉलर में से कम खर्च करते हैं। जिसकी वजह से उपभोग पर प्रभाव पड़ता है और अर्थव्यवस्था की वृद्धि धीमी पड़ती है।

अतएव असमानता में कमी और समानता में इजाफा एक महत्त्वपूर्ण न्यायसंगत आर्थिक तर्क है। वैश्विक आर्थिक मंदी की धारा को पलटने हेतु यह एक महत्त्वपूर्ण आयाम भी है। यह अन्य कारणों जैसे नैतिक, नीतिसंगत, सामाजिक व राजनीतिक कारणों के अलावा है कि क्यों असमानता से निपटा जाये और क्यों समानता को अधिक प्रोत्साहित किया जाये। (सप्रेस/थर्ड वर्ल्ड नेटवर्क फीचर)

पृष्ठ 11 का शेष...

और अमीरी दोनों की हमारे देश में कमी थी। अमेरिका दुनिया का सबसे शिक्षित, विकसित एवं अमीर देश है। मगर वहाँ का शोध हमें बताता है कि जैसे-जैसे धन-दौलत और शिक्षा का व्यापार बढ़ता है, सफल लोगों में करुणा और संवेदना कम होती जाती है! सत्ता, धन-दौलत और रूतबा पाने के बाद 'वैष्णव जन' बने रहना आसान नहीं होता क्योंकि फिर पीर पराई जानना मुश्किल हो जाता है। यह बात हमारे पौराणिक साहित्य में तो सदियों से है। सामाजिक काम करनेवाले गांधी जैसे लोगों ने हमें इसकी फिर याद दिलाई थी, लेकिन हम उसको भूल गए। अब तो यह हाल है कि लोग भागे जा रहे हैं, बगैर सोचे समझे। कइयों को तो यह भी पता नहीं कि उनकी मंजिल कौन सी है? चौराहे पर किधर जाना है? जिधर पाँव पड़ते हैं, उधर ही निकल जाते हैं। ❑

मालिक को जाग जाना चाहिए

हिन्दुस्तान में जहाँ बाजार भरता है, वहाँ झूठ ही झूठ का बाजार होता है। होना तो यह चाहिए कि व्यापारी सेवा का भाव रखें। व्यापार एक धर्म है। शास्त्रकारों ने बताया है कि वैश्यों को व्यापार के धर्म का आचरण करना चाहिए। धर्म का मतलब लूटना नहीं होता, बल्कि सेवा करना होता है जो चीज एक जगह नहीं मिलती, उसको दूसरी जगह से लाकर लोगों को देना और उसमें जो अपनी मेहनत और खर्च लगा हो उसको जोड़कर ठीक भाव पर बेचना।

वास्तव में किसान मालिक है और व्यापारी सेवक हैं। सेवक कभी मालिक से बढ़कर नहीं होता। जब हिन्दुस्तान में मालिक गरीब है तो सेवक भी गरीब ही होना चाहिए। लेकिन बात उलटी हो गयी है, जो मालिक है वह गरीब बन गया है और सेवक श्रीमान् हो गया है। यह श्रीमान् बना मालिक को लूटकर। आज अगर उन सेवकों को कोई उनका धर्म सिखाये तो वे नहीं सीखेंगे। इसलिए अब मालिक को ही जाग जाना चाहिए। मालिक के जागने का मतलब यह है कि वह अपना आधार बाजार पर न रखे। अगर गाँववाले अपनी जरूरत की चीजें गाँव में ही बना लें तो हर गाँव समान बन सकता है। अगर आप शहर में बनी बनायी चीजें खरीदते रहेंगे तो लूट से आपको कौन बचायेगा!

–विनोबा

(इछोड़ा, आंध्रप्रदेश, 13 मार्च, 1951 के प्रवचन से)

भाजपा : कमाल के ऐब

❑ चिन्मय मिश्र

फकत हुनर ही नहीं ऐब भी कमाल के रख,
सो दूसरों के लिए तजरबे मिसाल के रख। –अहमद फराज

भारतीय जनता पार्टी की अगुवाई में कार्यरत एन.डी.ए. सरकार अगले महीने अपने कार्यकाल के दो बरस पूरे करने जा रही है। जिस जोर-शोर से लोकतांत्रिक मूल्यों की पुर्नस्थापना का डंका पीटते हुए नरेंद्र मोदी ने अपना चुनाव अभियान चलाया था वह उन्होंने स्वयं ही पहले अरुणांचल और अब उत्तराखंड में समेट लिया है। इतना ही नहीं उन्होंने चुनाव के दौरान और पिछले 10 वर्षों में विपक्ष में रहते भारतीय जनता पार्टी ने किये थे। इसका नवीनतम उदाहरण ई-कामर्स में 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की अनुमति देना है। इससे पहले आधार संख्या को कानूनी जामा पहनाना, कानून को अपने समर्थन से पारित करवाना व सत्ता में आने के बाद उसे बदलने का प्रयास, खाद्य प्रसंस्करण में 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति, बिना आतंकवादी गतिविधियाँ समाप्त हुए पाकिस्तान से चर्चा और संयुक्त जाँच दल जिससे आईएसआई के अधिकारी भी शामिल हैं, को पठानकोट का दौरा करवाना जैसे तमाम मुद्दों को शामिल किया जा सकता है।

यदि ई-कामर्स की बात करें तो इसकी वजह से देश को अरबों रुपयों का नुकसान करों की वसूली न हो पाने की वजह से हो रहा है। वही दूसरी ओर हमारे यहाँ गरीब 4 करोड़ लोग सीधे-साधे खुदरा व्यापार से जुड़े हैं। यदि इस तरह के व्यापार को अत्यधिक प्रोत्साहन सिर्फ इसलिए दिया जाये कि इससे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आता है तो दूसरी ओर इस बात पर विचार करना चाहिए कि क्या हमारे देश के नागरिक अब सिर्फ ''कोरियर बाय'' यानी वस्तुओं को ग्राहकों के घर पर पहुँचाने का काम ही कर पायेंगे? यदि इसे बढ़ावा देना है तो ''मेक इन इंडिया'' का नाटक रचने की क्या आवश्यकता है। वहीं दूसरी ओर सरकारी प्रचार तंत्र हमें यह समझाने पर उतारु हो गया है कि यदि भारत स्वच्छ हो जायेगा और प्रत्येक घर में शौचालय बन जायेंगे तो भारत एक सुपर पावर यानी महाशक्ति में रूपांतरित हो जायेगा। सरकार ने कभी यह नहीं समझाया कि शौचालयों के लिए पानी की व्यवस्था किस प्रकार की जायेगी। आज महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान तथा तमाम अन्य राज्य पिछले एक दशक से पानी की भयावह कमी की त्रासदी झेल रहे हैं। लेकिन उस दिशा में कोई ठोस सकारात्मक पहल दो साल बाद भी दिखाई नहीं दे रही है। किसानों की आत्महत्याएँ कम होने का नाम ही नहीं ले रही हैं और सरकार फसल बीमा का झुनझुना पकड़ा कर खेती-किसानी की समस्या समाप्त होने का दावा कर रही है। बीमा सिर्फ राहत दे सकता है जीवन नहीं। खेती को आज नवजीवन की आवश्यकता है। गेहूँ की पैदावार में आयी असाधारण कमी के बावजूद बाजार में भाव न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) से कम है। इस विरोधाभास से कैसे निपटा जायेगा?

यह तय है कि पिछले दो वर्षों में 2जी या कोयला घोटाला जैसे भ्रष्टाचार के बड़े मामले सामने नहीं आये। परन्तु भ्रष्टाचार में कमी की बात अब भी बेमानी है। कालाधन वापसी का वायदा पूरा करने की बात तो दूर विजय माल्या का विदेश भाग जाना कुछ और ही दास्ताँ बयाँ कर रहा है। मध्यप्रदेश जैसे राज्य में पुलिस व वन कर्मचारियों की हत्या के बावजूद रेत खनन माफिया का छुट्टा घूमना भ्रष्टाचार की गहराई को सामने लाने को काफी है। यही पर व्यापम घोटाले में किसी पर भी कार्यवाही न होना भ्रष्टाचार की गहराई को सामने लाने के लिए काफी है। इस बीच बिल-मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन के कहने पर राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम में नये वैक्सीन जोड़ना और अब इस फाउंडेशन को निगरानी सूची में रखना प्रश्न का उत्तर नहीं है बल्कि तमाम प्रतिप्रश्न खड़े कर रहा है। पिछले दिनों से पूरे देश के स्वर्णकार हड़ताल पर हैं लेकिन सरकार की ओर से उन्हें मनाने या समझाने के ठोस परिणाम सामने नहीं आ रहे हैं, बल्कि अब तो यह खबर फैलाई जा रही है कि सरकार जेवरात निर्माण में भी 100 प्रतिशत विदेश निवेश को मंजूरी देने वाली है। यानी सीधे शब्दों में कहें तो स्वदेशी का डंका बजाने वाला दल अब 'इंपोरटेड' के मायाजाल में उलझता जा रहा है। इस प्रक्रिया से उसके स्थायी मतदाता व समर्थक अर्थात् छोटे व्यापारी उससे लगातार दूरी बनाते जा रहे हैं। नीरज ने कहा है–

आग लेकर हाथ में पगले जलाता है किसे,
जब न ये बस्ती रहेगी तू कहाँ रह जायेगा।

इंडिया शाइनिंग से हाथ जला लेने के बाद अब मेक इन इंडिया में गर्दन फँसा कर भाजपा अगले चुनाव के लिए सुरक्षित हो जाना चाहती है। परन्तु वह यू.पी.ए. (दो) का हश्र भूल गयी, जिसने अपने पहले कार्यकाल में मनरेगा जैसे कार्यों को अमली जामा पहनाकर दूसरी पारी के लिए रास्ता बनाया था। आज महँगाई तो पिछले सारे रिकार्ड तोड़ चुकी है।

खनिज तेल के भाव कम होने से खुशी मनाने के जुनून में हम भूल गये हैं कि खाड़ी देशों में इस वजह से रोजगार में 30 प्रतिशत की कमी आ गयी है और हमारा सबसे अधिक विदेशी धन वहीं पर कार्य कर रहे कामगारों से आता है। मगर अपना ही आशियाना जलते देखकर भी हम सचेत नहीं हो रहे हैं।

प्रधानमंत्री लगातार विदेश यात्राएँ कर रहे हैं, लेकिन हासिल क्या हो रहा है, इस पर भी गंभीरता से सार्वजनिक बहस करना अब आवश्यक हो गया है। यह कत्तई आवश्यक नहीं है कि राष्ट्रवाद के नाम पर यह अपील की जाये कि विदेशी मामलों में सभी राजनीतिक दलों का सुर एक होना चाहिए। यदि सरकार विपक्ष व अन्य राजनीतिक दलों से चर्चा किये बिना मनमाने फैसले लेगी तो एकराय की उम्मीद कैसे की जा सकती है। गौर करिये अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को एफ-16 लड़ाकू विमान बेचने की अनुमति, प्रधानमंत्री की लाहौर यात्रा के तुरंत बाद पठानकोट वायुसेना अड्डे पर हमला, नेपाल का चीन से रेल, सड़क, वायु एवं ईंधन की आपूर्ति को लेकर समझौता, श्रीलंका द्वारा चीन को बंदरगाह बनाने की अनुमति पुनः दिया जाना, आस्ट्रेलिया, कनाडा और थाइलैंड द्वारा भारत द्वारा हाल ही में घोषित नयी फसल बीमा नीति के खिलाफ विश्व व्यापार संगठन में शिकायत करना जैसे तमाम मसले हैं जिससे हमें परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

वास्तविकता तो यही है कि केंद्र सरकार अपने तमाम फैसले अत्यन्त तात्कालिक हितों को ध्यान में रखकर ले रही है। ऐसी ही कुछ ''स्मार्ट सिटी परियोजना'' के साथ हो रहा है। पिछले वर्ष इसे लेकर इतना प्रचार हुआ और इस वर्ष बजट में इसका जिक्र तक नहीं है। इसके अलावा सार्वजनिक क्षेत्र में घटता निवेश जिसमें कृषि के साथ ही साथ शिक्षा व स्वास्थ्य भी शामिल हैं, भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं दे रहे हैं। सांप्रदायिकता, छात्र असंतोष, उग्र राष्ट्रवाद, शिक्षण संस्थानों में अपरिपक्व नियुक्तियाँ, उद्योगपतियों द्वारा लूट का अंतहीन सिलसिला और इसके बीच सूखा, जलवायु परिवर्तन, बेरोजगारी, भुखमरी जैसी तमाम समस्याओं का दिनोंदिन विकराल होते जाना वास्तव में नैराश्य की स्थिति पैदा करता जा रहा है। भाजपा को चुनते समय मतदाताओं ने इसे एक विकल्प के तौर पर आंका था, परन्तु यह तो पिछली व्यवस्था की पर्याय बनने से नहीं बच पा रही है। आज भारतीय मतदाता अजीब पशोपेश में है कि क्या वह एक बार पुनः ठगा गया है। उसकी परिस्थिति को यदि अहमद फराज के लफ्जों में कहें तो,

एक दीवाना ये कहते हुए हँसता जाता,
काश, मंजिल से भी आगे कोई रास्ता जाता। ❑

क्यूबा : बिगड़ी को बनाने का जतन

❑ एल.एस.हरदेनिया

क्यूबा में सन् 1958 में फिदेल कास्त्रो के नेतृत्व में कम्युनिस्ट क्रांति हुई थी। परन्तु 58 वर्ष बीतने के बाद अमेरिका ने अब क्यूबा के अस्तित्व को स्वीकारा है। क्यूबा और अमेरिका के बीच में सिर्फ 90 मील की दूरी है। इसके पूर्व भी अमेरिका ने कम्युनिस्ट देशों को मान्यता देने में अनेक वर्षों की देरी की थी। सोवियत क्रांति सन् 1917 में हुई थी, परन्तु उसे मान्यता सन् 1937-38 में दी गयी। इसी तरह चीन में 1948 में क्रांति हुई थी, परंतु उसे भी मान्यता देने में लगभग इतना ही समय लगा था। परन्तु जो समय क्यूबा को मान्यता देने में लगा, उसने पिछले सब रिकार्ड तोड़ दिये हैं। अमेरिका ने इस दरम्यान क्यूबा में कम्युनिस्ट राज को तहस-नहस करने के अनेक प्रयास किये। इसके अलावा फिदेल की हत्या कराने के भी अनेक प्रयास किये गये। फिदेल की अपने देश में अद्भुत लोकप्रियता है।

मुझे वर्ष 1971 में क्यूबा जाने का अवसर राजधानी हवाना में पत्रकारों के एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारतीय श्रमजीवन पत्रकार संघ के प्रतिनिधि के रूप में मिला था। उस समय भारत ही नहीं यूरोप के अनेक देशों से भी क्यूबा जाने के लिए हवाई यात्रा की सुविधा नहीं थी। इसलिए सारी दुनिया के पत्रकार प्रतिनिधि क्यूबा जाने के लिए मास्को में एकत्रित हुए थे। यहाँ तक कि पड़ोसी देशों के पत्रकारों को मास्को आना पड़ा था।

मास्को से हमारी पूरी यात्रा समुद्र के ऊपर हुई थी। क्यूबा से थोड़ी दूरी पर हमारे हवाईजहाज के चालक को यह महसूस हुआ कि विमान का ईंधन इतना कम हो गया है कि शायद हवाना पहुँचना संभव न हो। ईंधन में कमी के कारण जोरदार तूफान का आना था। जिससे उसकी गति कम हो गयी थी। चूँकि आस-पास कोई देश नहीं था, इसलिए इसके अलावा कोई विकल्प नहीं था कि समुद्र के किसी टापू पर उतर कर ही ईंधन लिया जाये। पयलेट ने बरमूडा नाम के टापू पर उतरने की इजाजत माँगी। उस समय बरमूडा, अमेरिका और ब्रिटेन के परमाणु हथियारों का अड्डा था, इसलिए वहाँ उतरने की इजाजत नहीं दी गयी।

यात्रियों में सोवियत संघ के सबसे बड़े अखबार प्रावदा के संपादक भी थे। पायलेट ने उनसे अनुरोध किया कि वे सोवियत संघ के राष्ट्रपति से अनुरोध करें कि वे बरमूडा पर उतरने की इजाजत दिलवायें। उस समय ब्रेजनेव सोवियत संघ के राष्ट्रपति थे। उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री से अनुरोध किया, इसके बाद ही बरमूडा में उतरने की इजाजत मिली। यदि इजाजत नहीं मिलती ते संभवतः हमारा विमान समुद्र में डूब जाता।

इजाजत तो मिल गयी परन्तु बरमूडा के अधिकारियों ने ईंधन देने से इंकार कर दिया। वहाँ के अधिकारियों ने हवाईजहाज में प्रवेश किया और जिन लोगों के पास कैमरे थे, उन्हें जब्त कर लिये। वहाँ हम लोगों को सात से आठ घंटे रुकना पड़ा। इस बीच उन्होंने हमें पीने के लिए पानी तक नहीं दिया। बड़ी मुश्किल से वहाँ के अधिकारियों ने ईंधन दिया और हमारी उड़ान हवाना की तरफ बढ़ी। जब हवाईजहाज हवाना के ऊपर उड़ रहा था तब हम लोगों ने देखा कि हवाई अड्डे पर विशाल भीड़ एकत्रित है। हवाई अड्डे पर भीड़ नारे लगा रही थी ''अमरीकी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद, ब्रिटिश साम्राजयवाद मुर्दाबाद''। थोड़ी देर में हमने देखा कि स्वयं फिदेल कास्त्रो आये हुए हैं। वहाँ बाहर बने मंच पर खड़े होकर उन्होंने एक लंबा भाषण दिया और अमरीकी हरकतों की तीव्र शब्दों में निन्दा की।

इस घटना से हमें महसूस हुआ कि क्यूबा और अमेरिका के बीच संबंध कितने कटु हैं। यह स्थिति अनेक वर्ष बीत जाने के बाद भी नहीं बदली। अमरीका ने सिर्फ क्यूबा को मान्यता नहीं दी, वरन् क्यूबा का आर्थिक बहिष्कार भी घोषित कर दिया। इसके अनुसार अमेरिका और उसके मित्र राष्ट्रों पर प्रतिबंध लगा दिया गया कि वे क्यूबा के साथ किसी भी प्रकार के संबंध नहीं रखेंगे। वे न तो क्यूबा को कोई चीज भेज सकेंगे और न ही बुला सकेंगे। उस समय क्यूबा में दवाइयों का भारी अभाव रहता था व डाक्टरों की भी कमी थी।

एक पत्रकार वार्ता में जब फिदेल से पूछा गया कि आपके यहाँ कितने डॉक्टर हैं तो उन्होंने जवाब दिया कि हमारे देश के अनेक डॉक्टर उनके धनी रोगियों के साथ क्यूबा छोड़कर चले गये हैं। उस समय सोवियत संघ अस्तित्व में था, इसलिए उसकी सहायता से क्यूबा को अपने पैरों पर खड़े होने का काफी लंबा समय मिला। सोवियत संघ की समाप्ति के बाद यह आशंका थी कि अब क्यूबा में कम्युनिस्ट शासन ज्यादा दिन नहीं चल पायेगा परन्तु यह आशंका भी भ्रमपूर्ण साबित हुई। इसका मुख्य कारण यह था कि क्यूबा में न सिर्फ कम्युनिस्ट क्रांति हुई थी परन्तु वहाँ के नागरिकों को भी वामपंथ के सिद्धांतों पर अगाध आस्था थी और उन्हें फिदेल कास्त्रो पर पूरा भरोसा था।

वर्षों पूर्व प्रसिद्ध कम्युनिस्ट नेता और सोवियत संघ के निर्माता लेनिन ने कहा था कि कम्युनिस्ट क्रांति का निर्यात नहीं किया जा सकता और न ही कोई देश क्रांति का आयात कर सकता है। कास्त्रो इस सिद्धांत के हामी थे। इसलिए वहाँ सोवियत संघ की समाप्ति के बाद भी कम्युनिस्ट राज पुख्ता रूप से कायम रहा। न सिर्फ क्यूबा में बल्कि समाजवादी क्रांति की मशाल लातिन अमेरिका के दूसरे देशों में भी पहुँची।

जब से ओबामा ने अमेरिका के शासन की बागडोर संभाली उस समय से ही उन्होंने क्यूबा से सामान्य संबंध बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी। कुछ दिन पहले क्यूबा ने अमेरिका में अपना दूतावास स्थापित कर दिया और बरसों बाद अमेरिकी राष्ट्रपति की हवाना यात्रा हुई। संबंध सामान्य होने की प्रक्रिया के पीछे सबसे बड़ा कारण आर्थिक बताया जाता है। क्योंकि क्यूबा में एक सशक्त बाजार तैयार हो गया है और वहाँ के निवासियों की खरीदने की शक्ति काफी हद तक बढ़ गयी है, इसलिए अमेरिका के व्यापारियों को यह महसूस हुआ कि क्यूबा से संबंध स्थापित किये जायें। व्यापारियों और उद्योगपतियों की लॉबी ने ओबामा के ऊपर दबाव बनाया और उसके चलते ऐसी स्थिति निर्मित हो गयी कि अमेरिकी राष्ट्रपति को क्यूबा की यात्रा भी करनी पड़ी। परन्तु अभी अनेक अड़चनें कायम हैं, जिन्हें दूर करने में काफी समय लग सकता है। जैसे अभी तक दोनों देशों के बीच में विधिवत रूप से व्यापारिक संबंध स्थापित नहीं हुए हैं।

ओबामा से मुलाकात के दौरान क्यूबा के वर्तमान राष्ट्रपति राउल कास्त्रो ने यह माँग की कि ग्वांटेनामा टापू उन्हें वापिस किया जाये। उसी तरह ओबामा ने अपेक्षा की है कि क्यूबा के निवासियों को असहमति का अधिकार दिया जाये। वैसे ओबामा ने क्यूबा में अपने भाषण के दौरान इस बात को स्वीकार किया कि व्यापारिक प्रतिबंध अब इतिहास का हिस्सा बन गया है और इसे समाप्त किया जाना चाहिए। उन्होंने अपने देश के सभी दलों से अपील की कि वे उनके इस काम में सहयोग दें। अपने भाषण में ओबामा ने कहा कि वैसे तो हवाना हमारे देश से सिर्फ 90 मील दूर है परन्तु इस दूरी को पार करने में हमें 58 साल लगे। क्यूबा की जनता ने ओबामा का भव्य स्वागत किया और उनके भाषण के दौरान खूब तालियाँ बजायीं।

वर्षों पूर्व सोवियत नेता निकिता खुश्चेव ने कहा था कि साम्यवाद और पूँजीवाद का सहअस्तित्व संभव है। लगता है ओबामा और राउल कास्त्रो इस सिद्धांत को अमलीजामा पहना पायेंगे। (सप्रेस)

खेती

❑ विवेकानंद माथने

जमीन प्रकृति की देन है एवं इस पर किसी की भी मालकियत नहीं हो सकती। समाज को केवल प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर उसके उपयोग का अधिकार है। गाँव के लोगों, आदिवासियों, किसान आदि सभी ने मेहनत करके जमीन को खेती योग्य बनाया है। खेती किसानों के जीवन का मुख्य आधार बनी और वह अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए खेती करता रहा। खेती उत्पादन का मुख्य साधन भारत की संस्कृति रही है। देश का विकास उसी के आधार पर हुआ है।

सम्पत्ति विभाजन, समता आधारित समाज व्यवस्था के लिए आवश्यक और महत्त्वपूर्ण कदम है। इसके मूल में यह विचार है कि संसाधन और उत्पादन के साधन खेती या उद्योग उस पर समाज का ही अधिकार रहना चाहिए। भारत में समता आधारित समाज व्यवस्था के लिए परिवर्तन की माँग उठी, जमींदारों के विरूद्ध हिंसा का प्रयोग हुआ, उनसे जमीन छीनी गयी, अहिंसा की राह पर भूदान, ग्रामदान आंदोलन चला, उसके माध्यम से 48 लाख एकड़ जमीन प्राप्त कर अधिकांश जमीन भूमिहीनों को बाँटी गयी और जनदबाव में सीलिंग कानून लाया गया।

लेकिन देश ने एक बार फिर से करवट बदल ली है। नयी आर्थिक नीति लागू होने के बाद प्राकृतिक संसाधन और उत्पादन के साधनों पर मालकियत के संबंध में कार्पोरेट हितैषी नीति अपनाने से संसाधनों की खुली लूट मची है और इसका सबसे अधिक प्रभाव जमीन पर पड़ रहा है। राष्ट्र निर्माण और विकास के नाम पर औद्योगिक गलियारे, औद्योगिक क्षेत्र, सेज, बड़े बाँध, कोयला खदानें, बिजली परियोजना, स्मार्ट शहर, शहर विस्तार, महामार्ग, बंदरगाह, हवाई अड्डे, रियल इस्टेट और कॉर्पोरेट फार्मिंग आदि के लिए बड़े पैमाने पर किसानों से जमीन छीनी जा रही है।

देश में विकास के नाम पर कुल कितनी जमीन खेती से निकालकर गैर खेती कार्य के लिए उपयोग में लायी गयी है या अधिग्रहित की गयी है, इसकी निश्चित जानकारी भारत सरकार के पास उपलब्ध नहीं है। भारत में खेती की जमीन कितनी है, यह भी सरकार को ज्ञात नहीं है। सरकारें सालों साल प्रोजेक्शन के आधार पर आकलन करके ही खेती जमीन का क्षेत्र दे रही है। देश की कुल कृषि भूमि के बारे में केंद्रीय कृषि विभाग और सेम्पल सर्वे के आकलन में लगभग 5 करोड़ हेक्टेयर (हे.) का अंतर है। यह गंभीर बात है।

भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्र 32.87 करोड़ हे. है। जिसमें रिपोर्टेड क्षेत्र 30.59 करोड़ हे. है। कृषि मंत्रालय के अनुसार सन् 1971 में खेती बुआई का क्षेत्र 14.09 करोड़ हे. था, सन् 2011 में वह 14.16 करोड़ हे. है। जबकि कृषि विभाग की रिपोर्ट के अध्ययन से पता चलता है कि गत 50 साल से बुआई के क्षेत्र में कमी होकर यह लगभग 14 करोड़ हे. के आस-पास ही रह गया है। दुर्भाग्य से देश में खेती संबंधित सभी योजनाएँ प्रोजेक्शन के आधार पर बनायी जाती रही हैं।

सेम्पल सर्वे 2013 ''पारिवारिक स्वामित्व एवं स्वकर्षित जोत'' के अनुसार ग्रामीण भारत में रहने वाले परिवारों के स्वामित्व में सन् 1992 में 11.74 करोड़ हे. जमीन थी जो कि सन् 2013 में घटकर मात्र 9.24 करोड़ हे. रह गयी है। अर्थात् बीस साल में ग्रामीण भारत के परिवारों के स्वामित्व में 2.5 करोड़ हे. जमीन कम हुई है। सन् 1992 से 2013 तक ग्रामीण भारत में खेती की जमीन में प्रतिशत की कमी आयी है। सेम्पल सर्वे 2013 के अनुसार 1992 में प्रति परिवार औसत 1.01 हे. जमीन थी। जो 2013 में प्रति परिवार औसत 0.592 हे. रह गयी है। कृषि प्रधान भारत के लिए यह चिंता का विषय बन गया है। आज भी देश खाद्यान्न में पूर्ण आत्मनिर्भर नहीं है। लेकिन सरकार को खेती जमीन पर हो रहे आक्रमण, खेती की जमीन का कम होना और उसके देश पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव की चिंता नहीं है। बल्कि देश के नीतिनिर्धारक नीतियों को सुधारने के बजाय संकट का समाधान औद्योगिकरण में देख रहे हैं। भारत में वैश्विक विनिर्माण और व्यापारिक केंद्र के रूप में दिल्ली-मुम्बई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर विकसित करने का काम शुरू हो चुका है। योजना के अनुसार इसमें 150 से 200 वर्ग कि.मी. के 9 औद्योगिक जोन होंगे। दिल्ली-मुम्बई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर को 1483 कि.मी. लम्बाई और लगभग 300 कि.मी. चौड़ाई के 4.36 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र में विकसित किया जा रहा है। भारत में 6 इंडस्ट्रियल कॉरिडोर बनाने की योजना है। नॉर्थ ईस्ट म्यानमार कॉरिडोर छोड़कर देश के 16 राज्यों को प्रभावित करनेवाले 5 कॉरिडोर की कुल लंबाई 6749 कि.मी. है और कुल प्रभावित जमीन क्षेत्र 20.14 करोड़ हे. आता है। जो देश की रिपोर्टेड जमीन क्षेत्र के 66 प्रतिशत के बराबर है। किसी भी परियोजना के लिए कितनी जमीन आवश्यक है यह प्रोजेक्ट रिपोर्ट में दिया जाता है लेकिन दिल्ली-मुम्बई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर के प्रोजेक्ट रिपोर्ट में इसकी स्पष्टता नहीं है। अनुमान के आधार पर अगर सभी कॉरिडोर के लिए कुल प्रभावित क्षेत्र की 20 प्रतिशत जमीन

ली जाती है, तब भी यह 4 करोड़ हे. जमीन होती है। इसके अलावा देश में बन रही अन्य परियोजनाओं का क्षेत्र अतिरिक्त होगा।

खेती की जमीन धनपतियों के लिए रियल इस्टेट का व्यवसाय बन गया है। छोटे बड़े शहरों की परिधि की लगभग अधिकांश जमीन अब धनपतियों के पास जा चुकी है। खेती का बोझ कम करने की बात कहकर सरकार किसानों को खेती से हटाकर उनकी संख्या 20 प्रतिशत रखने की योजना पर काम कर रही है। खेती में विदेशी निवेश की अनुमति, कॉर्पोरेट खेती यह सब उसी योजना का हिस्सा है। यहाँ विश्व व्यापार संगठन की शर्तों को पूरा करने के लिए, दुनिया के बाजार के लिए खेती करने की योजना है।

यह सारा काम किसानों के लाभ के लिए करने का दावा सरकारें कर रही हैं। बहुत चालाकी से किसानों की भलाई के नाम पर किसानों को लूटने का काम हो रहा है। अगर ये योजनाएँ सफल हुईं तो अनुमान लगाया जा सकता है कि 9.2 करोड़ हे. खेती जमीन से कम से कम और करोड़ हे. भूमि खेती से होगी। देश के पास केवल 5 करोड़ हे. खेती भूमि बचेगी।

सरकार किसानों की जमीन छीनने को लेकर अत्यंत गंभीर है। इसलिए वह केवल योजना बनाकर नहीं रुकी, बल्कि कम्पनियों की सुविधानुसार भूमि संबंधित नीतियों और कानूनों में परिवर्तन कर रही है। जनता विरोध के बावजूद भूमि अधिग्रहण कानून को कम्पनियों के अनुकूल बदलने का काम लगातार किया जा रहा है। यह भी आशा जतायी जा रही है कि आदिवासियों को जमीन बेचने का अधिकार उनकी जमीन पर कब्जा करने की योजना है। उन्हें जमीन के पट्टे देना उसी योजना का हिस्सा है। जिन योजनाओं के लिए जमीन अधिग्रहित की गयी है, उसका निर्धारित उपयोग न होने पर वह किसानों को वापस देने का कानून बनाने की माँग देश में अनेक जगह उठी है, सरकार ऐसा कानून नहीं बनाना चाहती। परियोजनाओं के लिए अधिग्रहित अतिरिक्त जमीन के लिए लैंड बैंक बनाया गया है, ताकि जमीन आसानी से कम्पनियों को हस्तांतरित की जा सके।

इस देश की जनता को यह जानने का पूरा अधिकार है और भारत सरकार को यह स्पष्ट करना चाहिए कि सन् 1991 से आज तक देश की कृषि की कितनी जमीन गैर कृषि कार्य के लिए उपयोग में लायी गयी है या अधिग्रहित की गयी है और आज देश के पास कितनी खेती की जमीन है। साथ ही सरकार को यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि विकास के नाम पर बनी उपरोक्त योजनाओं के लिए प्रोजेक्ट रिपोर्ट के आधार पर कितनी जमीन की आवश्यकता है और उसका देश के किसान और खेती पर क्या असर पड़ने वाला है।

देश में आज भी 60 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि से रोजगार प्राप्त करते हैं। खेती किसानों के लिए आजीविका और रोजगार का एकमात्र साधन बचा है। कृषि भूमिहीन किसानों को भी रोजगार देती है। खेती को जानबूझकर घाटे का सौदा बनाया गया है, ताकि किसान मजबूर होकर अपनी जमीन बेच दें। कृषि जमीन की लूट भारत के किसानों के लिए अत्यंत घातक सिद्ध हुई है। इससे गाँव कंगाल हुए हैं। मानवतावादी अर्थशास्त्री भी कह रहे हैं कि आधुनिक विकास काल में आर्थिक विषमता चरम सीमा पर पहुँची है। कृषि प्रधान भारत को औद्योगिक प्रधान भारत बनाने का यह प्रयास खतरनाक और विनाशकारी है, यह देश को लूटने की एक कार्पोरेटी साजिश है। इसके माध्यम से भारत में गुलामी की नयी व्यवस्था स्थापित की जा रही है। (सप्रेस)

सिद्ध अहिंसा का आदर्श

''हमें तो गणेश शंकर विद्यार्थी बनना चाहिए। गणेश शंकर ने अहिंसा की सेना का एक बहुत ऊँचा आदर्श हमारे सामने रख दिया। उसकी आहूति व्यर्थ नहीं गयी है। वह इतिहास में अमर हो गया, उसकी अहिंसा सिद्ध अहिंसा थी। उसी की तरह प्रहार सहते हुए मैं खुद शान्त रहूँ और लोगों से शान्त रहने को कहूँ और खुद हँसता हुआ मरूँ, ऐसा भाग्य मैं चाहता हूँ। गणेश शंकर के जीवन से अहिंसा का पाठ सीखो। हिन्दू-मुसलमानों की सच्ची सेवा गणेश शंकर की तरह करनी है। यही रास्ता दोनों को मिला सकता है और एक-दूसरे को भाई बनाने में मदद दे सकता है।''

''यद्यपि हृदय खून के आँसू रोता है, फिर भी गणेश शंकर की जैसी शानदार मृत्यु पर सम्वेदना प्रकट करने को जी नहीं चाहता। यह निश्चय है कि आज नहीं तो आगे किसी दिन उनका निष्पाप खून हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य को सुदृढ़ बनायेगा....'' **(गणेश शंकर विद्यार्थी की शहादत पर महात्मा गांधी)**

जनता को रूठने का अधिकार है

इस महत्कार्य में सब एकाएक एक साथ हो जायें, ऐसा कठिन है। हमें धैयपूर्वक विरोधी मत रखनेवाले व्यक्तियों को शिक्षित करना पड़ेगा। उनके प्रति अरुचि प्रकट करके, उनका बहिष्कार करके हम उनका मत परिवर्तन तो नहीं कर सकते, उन्हें दलीलों से विनयपूर्वक समझा-बुझाकर ही अपनी ओर करना पड़ेगा। ऐसा करके ही हम सही अर्थों में जनमत को प्रशिक्षित कर सकेंगे। (नवजीवन, 11.07.1920)

–महात्मा गांधी

असम हिंसा की सच्चाई

❑ गौतम खण्डप्पा

असम के बोडो क्षेत्र में हुई हिंसा, आगजनी, लूट और अशांति से सारा देश दुःखी है। इससे बोडो क्षेत्र की जनता की परम्परागत शांतिप्रियता पर धक्का लगा है। साथ ही अखण्ड भारत और बुद्ध, गांधी, शंकरदेव, आजान फकीर एवं महावीर के इस देश में अमानवीय निर्मम हत्या से सम्पूर्ण राष्ट्र दुःखी है।

असम में जो रक्तपात होते आ रहे हैं, उन्हें सांप्रदायिक दंगे के रूप में पेश किया जाना दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जा सकता है। जिन मासूमों को अपनी जान हिंसा के इस विस्फोट में गँवानी पड़ी, उनके शोक संतप्त परिवारों का विश्लेषण निरर्थक है कि हत्यारों ने उन्हें अपनी क्रूरता का निशाना उनके धर्म के कारण बनाया या नस्लवादी द्वेष की वजह से। इस पाशविक आचरण की भर्त्सना के साथ-साथ यह जरूरी है कि भविष्य में इसके दोहराव को असम्भव बनाने के लिए प्रभावशाली कदम तत्काल उठाए जाएँ। यह तब तक नहीं हो सकता जब तक हम तटस्थ होकर बार-बार भड़क उठने वाले उपद्रवों के वास्तविक कारणों के प्रति आँखें मूँदे रहेंगे।

असम में हिंसा पहली बार नहीं हुई है। यह कई दशकों से चली आ रही है। लेकिन जिस समय देश में आम चुनाव चल रहे थे, ऐसे में लोगों का मारा जाना सुरक्षा में चूक ही मानी जाएगी। वर्तमान हिंसा में जितने लोग मारे गये उनमें से अधिकांश बांग्लादेशी मुसलमान थे। दरअसल, यह लड़ाई जमीन की है। बांग्लादेश से बड़ी संख्या में आये लोग असम ही नहीं त्रिपुरा, मेघालय, मणीपुर, सिक्किम और पश्चिम बंगाल के रास्ते भारत में आने वाले शरणार्थियों में अनेक असामाजिक अपराधी भी होते हैं जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा ही हैं। बड़ी संख्या में असम में जो लोग चले आते हैं, अपनी रोज-रोटी चलाने लगते हैं। चरमपंथी इनका विरोध अवश्य करते रहे हैं। राजनीतिक पार्टियाँ बांग्लाभाषी लोगों का इस्तेमाल करती रही हैं। वर्तमान में जो हिंसा असम में हुई है, यह इसी का परिणाम है। इन खून-खराबे को हिन्दू-मुस्लिम दंगे की शक्ल नहीं दी जानी चाहिए। एक पक्ष बोडो आदिवासियों का है और ईसाई जो खुद उपेक्षित अल्पसंख्यक होने के कारण अलगाववादी बागी बने हैं तो दूसरी ओर इनसे भिड़ने वाले बांग्लाभाषी हैं जो गैर कानूनी तरीके से भारत पहुँचते हैं।

बांग्लादेश से असम आने वाले लोगों में हिन्दू और मुसलमान दोनों होते हैं। असम एक बहुजातीय समाज है जहाँ हिन्दू 61 प्रतिशत हैं जबकि मुसलमान का प्रतिशल 34 है। बोडोलैण्ड के अलावा असम के अन्य क्षेत्रों में भी बांग्ला बोलने वाले मुसलमानों और असमिया बोलने वाले हिन्दुओं के बीच तनाव दशकों से चला आ रहा है। असम हिंसा में भेंट चढ़े लोग जिनमें अब तक सन् 1983 में 3 हजार से अधिक लोग मारे गये थे। इसे नल्ली हत्याकांड तथा दूसरे विश्वयुद्ध के बाद संसार का सबसे बड़ा हत्याकांड कहा जाता है। बांग्लाभाषा बोलने वाले मुसलमानों और बोडो समाज के बीच तनाव का इतिहास 60 साल से भी अधिक पुराना है। यहाँ के जनसंहार को स्वतंत्र भारत में सबसे बड़ी हिंसक घटनाओं में गिना जाता है।

अक्टूबर 1993 : बोगाई गाँव जिले में 50 की मौत।

जुलाई 1994 : बारपेटा जिले में 100 से अधिक की हत्या।

मई 1996 : कोकराझार व बोगाईगाँव में हिंसा से दो सौ मरे, लाखों विस्थापित।

मई-सितम्बर 1998 : बोडो और संथाल आदिवासियों के बीच संघर्ष में 50 मरे, 8 लाख विस्थापित, राहत शिविरों पर हमला।

अगस्त-अक्टूबर 2008 : उदलगुड़ी और धरांग संघर्ष में 70 मरे।

जुलाई 2012 : कोकराझार में बोडो और मुस्लिमों में संघर्ष, 5 दिनों में 100 मरे, चार लाख विस्थापित, सैकड़ों घर जलाए गए।

मई 2014 : कोकराझार, चिरांग व बक्शा में हिंसा, आगजनी से लगभग 35 लोग मारे गये।

जुलाई 2012 के मध्य में असम के बोडो में हुई घटनाओं के बाद वहाँ शांति स्थपना हेतु गांधीजनों ने काफी प्रयास किये। शांति-यात्रा के दौरान असम की स्थिति विकट एवं तनावपूर्ण थी। वहाँ चार लाख से अधिक लोग विस्थापित होकर शिविरों में रह रहे थे। सौ से अधिक लोग मारे गये थे, जिनमें से ज्यादातर मुस्लिम एवं बोडो समुदास से थे। इसके अलावा हजारों घरों को जला दिया गया था, जिसमें करीब 12 हजार कोकराझार जिले से सम्बन्धित थे। सितम्बर 2012 से गांधीयन शांतियात्रियों द्वारा बी.टी.ए.डी. में शांति-कार्य निरन्तर चल रहा है। वहाँ पर अनेक व्यक्ति, संगठन एवं सरकारी विभाग ने प्रभावित लोगों के बीच राहत एवं पुनर्वास का कार्य किया और स्वास्थ्य शिविर भी लगाये। साथ ही गांधीयन लोगों ने पूरे क्षेत्र में शांति-सद्भाव हेतु जनसंपर्क अभियान चलाया। इन्होंने सभी समुदायों के लोगों से सम्पर्क साधा। इस तरह विभिन्न लोगों से संवाद कर वस्तुस्थिति को समझने एवं समझाने की कोशिश की गयी। साथ ही असम के राज्यपाल जे.बी.पटनायक, मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगई एवं बी.टी.ए.डी. के प्रमुख श्री हग्रामा मोहिलारी सहित कई पूर्व मंत्रियों, सांसदों, विधायकों, पार्षदों इत्यादि से भी मुलाकात की गयी। गांधीजनों ने शांति स्थापना में योगदान दिया। बोडो क्षेत्र में विभिन्न समुदायों के युवाओं में शांति सद्भावना एवं राष्ट्रीय एकता की भावना मन में पैदा हो इसके लिए युवा शिविर भी आयोजित किये। ❑

विश्व के धर्मों में गोरक्षा

❑ गीता मेहता

गाय हमारी सेवा और प्रेम को पहचानती है और अधिक से अधिक लाभ देने के लिए तैयार रहती है। गोसेवा यानी मानवता के विकास के लिए गाय को मानव-कुटुंब में स्थान देकर उससे सेवा लेते हुए गाय की आखिर तक उत्तम हिफाजत करना और वैज्ञानिक बुद्धि से गाय को स्वावलंबी बनाना, जिससे वह किसी को भाररूप महसूस न हो।

विनोबाजी 'गाय की उपासना' शब्द ठीक समझते थे, क्योंकि गोरक्षा में अहंकार आता है। 'गाय की उपासना' में गाय की सेवा और रक्षण दोनों समाविष्ट है। उनको गो-सेवा में शुद्ध चित्त की आवश्यकता मालूम होती है। गाय की तरह हमें नम्र और प्रेमी बनना चाहिए। हमारी वाणी में शुद्धि और हृदय में जागृति आनी चाहिए।

गो-उपासना हिंदूधर्म की अपनी विशेषता है। यह मानवता का विचार है। भगवद्गीता में कृषि **गोरक्ष्यवाणिज्यम् ब्रह्मकर्म स्वभावजम्** कहा है। हमारे देश की अर्थव्यवस्था में गाय-बैल रीढ़ के समान हैं। देश की रीढ़ टूट न जाय, उसकी हमें चिंता करनी चाहिए। सच्ची गोसेवा ही भारत की अर्थव्यवस्था सुधारने का उपाय है। मरी हुई गाय, बैल के चमड़े, हड्डी, मांस, झिल्ली, आंत सिंग सब काम की चीजें हैं।

गोरक्षा के लिए गोरक्षा शास्त्र सीखना चाहिए। विज्ञान की मदद से बुद्धिपूर्वक, योजनाबद्ध तरीके से गाय की नस्ल में सुधार किया जाना चाहिए।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनंदनः।
पार्थोवत्स सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥

अर्थात् गोदुग्ध गीता के समान है और गीता गोदुग्ध के समान। गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमय और गोमूत्र के पंचगव्य को ग्रहण किये बिना यज्ञोपवीत संभव नहीं और यज्ञोपवीत के बिना गायत्री ग्रहण करने का अधिकार नहीं मिलता। अतः गोमाता ही गायत्री-सिद्धि का अधिकारी बनाती है। पाँचवे प्राण गोविंद हैं, जो गोमाता और उसके वंश की सेवा एवं रक्षा का मानवता को पाठ पढ़ाने के लिए ही पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। इस प्रकार हिंदुत्व के पाँच प्राणों में गोमाता की महत्ता सर्वोपरि और असंदिग्ध है।

गाय मनुष्य समाज के लिए उपयोगी है और आर्थिक दृष्टि से लाभदायक है। यह हम सिद्ध करें तभी हमारी गोसेवा टिक सकती है। भारतीय समाजवाद कहता है कि मनुष्य समाज के साथ-साथ गाय को भी अपने कुटुंब में स्थान दीजिये, उससे पूरा काम लीजिये और उसे पूरा रक्षण भी दीजिये। गाय और मानव एक-दूसरे का पालन करते हैं और इसीसे हमें विचार करना चाहिए। खेती और गोदुग्ध आदि के प्रयोग अहिंसा की खोज की परिणति है। शिकार तथा मांसाहार से मुक्ति दिलानेवाले गोरक्षा और कृषि के प्रति भारतीय जनता की एक विशेष भावना है।

ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते– बापू ने मणिभाई को ब्रह्मचर्य रखकर गाय की सेवा करने को कहा। यदि गोरक्षण करना है तो मनुष्य को समझदारी से अपनी संस्था मर्यादित रखनी चाहिए और इसीलिए ब्रह्मचर्य का आग्रह है।

वेद में कहा है—**इमा या गावः स जनास इंद्रः**—हे जनो, समझ लो, ये जो गायें जा रही हैं, वे इंद्र हैं। परमात्मा का एक रूप गाय भी है।

विष्णु सहस्रनाम में '**गोहितो गोपतिर् गोप्ता**' आया है। वेद का वचन है—**सहस्रधारा पयसा मही गौः** ऐसी गाय जिससे कि हजार धाराएँ रोज पैदा होती हों। गीता में दो दफा गो-वाचक शब्द आया है, दो बार लेकिन वेदों में गो-वाचक शब्द 742 बार आया है। गौ 535, धेनु 127, अघ्न्या 18, उस्रा 29, उस्रियाँ 33।

सुप्रमाणं भवतु अघ्न्याभ्यः अर्थात् इन अघ्न्याओं के लिए स्वच्छ, निर्मल, पानी की योजना हो।

गोपाल कृष्ण सबसे प्रिय नाम है। गोसेवकों को गाय जितना ही सौम्य बनना चाहिए। जिस गाय की वे उपासना करते हैं, उसी के जैसा स्वभाव उनका बनना चाहिए।

सिख पंथ के दशमेश गुरु गोविंदसिंह के मन में गोरक्षा के लिए बहुत आदर का भाव था। मारकण्डेय पुराण के देवी महात्म्य, दुर्गासप्तशती के आधार पर गुरुजी ने '**चण्डी दीवार**' की रचना की है। वीररस से भरपूर इस रचना में अनेक जगह अपनी माता दुर्गा भवानी से गोरक्षा की माँग की है।

यही देहु आज्ञा तुर्क गाहै खपाउँ।
गऊँ घातका दोष जन सिउ मिटाउँ॥

गोविंदसिंहजी के केशधारी वीरों ने बाद में गोरक्षा के लिए अनगिनत बलिदान दिये। इन कूका वीरों ने पंजाब में अनेक जगह अंग्रेजों के शह पर स्थापित बूचड़खानों को तोड़कर गोहत्यारों को मार डाला था। इस मामले में अंग्रेजों ने 65 नामधारी वीरों को तोपों से उड़वा दिया था। अनेक को काले पानी की सजा दी तथा नामधारी पंथ के गुरु सतगुरु रामसिंहजी को रंगून निर्वासित कर दिया, जहाँ बाद में उनका निधन हुआ।

जब आर्य समाज ने गोरक्षा का आंदोलन छेड़ा तो सिक्खों ने बहुत अधिक उत्साह दिखाया। सरदार इंद्रसिंह अमृतसर वालों ने घोषणा की थी कि गोरक्षा आंदोलन में हिंदुओं को जरा भी खतरा महसूस हुआ तो दस लाख सिक्ख अपनी कुर्बानी देने को तैयार खड़े हैं।

गुरु गोविंदसिंहजी के पूर्व के गुरुगण ने केवल गौ अपितु सभी जानवरों की हिंसा के खिलाफ थे।

मांस मासं सब एक है, मुर्गी हिरणी, गाय।
आँखि देखी नर खता है, ते नर नरक ही जाय॥
क्या बकरी क्या गाय है, क्या आनो जाया।
स्बको लहू एक है, यह साहब फरमाया॥
पीर-पैगम्बर औलिया सब मरने आया।
नाहक जीवन न मारिये, पोषण की काया॥

गुरु तेगबहादुर, गुरु अर्जुनदेव आदि सिक्ख गुरुओं के बलिदान हिंदूधर्म और गौमाता की रक्षा के लिए हुए थे। महाराजा रणजीतसिंह ने गोहत्या पर प्रतिबंध लगाने का पहला कार्य किया। 1857 का स्वातंत्र्य समर गाय की चर्बी के लिए उपयोग के विरोध में हुआ।

जैन धर्म

अहिंसा—प्राणी मात्र की हिंसा न हो–ऋषभदेव–ऋषभ यानी बैल–अहिंसा, सबका अपना-अपना महत्त्व है संसार का कोई भी प्राणी वध्य नहीं है। ध्रुव, नित्य और शाश्वत धर्म यही है कि संसार के किसी भी प्राणी का वध न किया जाय।

भारत में गाय को जितना पूज्य माना जाता है उतना तिब्बत में याक को पूज्य माना जाता है। जैन श्रावक खेती करते थे और हजारों कायों वाले गोकुल रखते थे।

धार्मिक दृष्टि से प्राणिमात्र अवध्य है। सामाजिक दृष्टि से उपयोगी पशुओं के संरक्षण में जैनधर्म की असहमति नहीं है। जैन आचार्यों ने अकबर इत्यादि राजाओं से गाय, बैल और भैंस की हत्या के विरूद्ध आदेश जारी करवाये हैं। हीरविजय ने अकबर से फरमान निकलवाया कि पर्यूषण उत्सव के 12 दिनों में जैन आबादी के किसी भी शहर में किसी भी पशु की हत्या न की जाये।

पंडित विवेकहर्ष ने भी बादशाह जहाँगीर से पर्यूषण उत्सव के दिनों में प्राणी हत्या की मनाही का फरमान प्राप्त किया।

पहले जैन लोग अपनी संपत्ति की गणना गौओं की संख्या से करते थे। व्रज और गोकुल उसके माप थे। एक व्रज या गोकुल दस हजार गायों का होता था। गोधन के धनी दस बड़े व्यापारियों में राजगृह के महाशतक और काशी के चूलनिपिता गीने जाते थे। हर एक के पास आठ-आठ गोकुल अर्थात् अस्सी-अस्सी हजार गौएँ थीं। आनन्द ने महावीर स्वामी से जब श्रावक व्रत लिया, तब 8 गोकुल पालने की शपथ ली थी।

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म करुणा धर्म है। गौतम बुद्ध का मतलब है उत्तम बैल। गौमांस भक्षण को गौतम बुद्ध ने वर्ज्य माना है। यथा—

माता पिता भाता, अन्ये वापि च जातका।
गावोनो परम मित्ता, यासु जायन्ति ओसघा॥
अन्नदा बलदा चेता, वण्णदा सुखदा तथा।
एतमत्थ वसं ऋत्वा नस्सु गावो दुनिं सु ते॥

जैसे माता-पिता, भाई, कुटुम्ब, परिवार के लोग हैं, वैसे ही गायें भी हमारी परम मित्र, परम हितकारिणी हैं, जिनके दूध से दवा बनती है। गाय अन्न, बल, रूप, सौंदर्य तथा सुख को देने वाली है। इन बातों को जानकर ही पहले के लोग गौ की रक्षा करते थे।

सम्राट अशोक के शिलालेखों में भी गाय-बैल आदि प्राणियों की हत्या न होने देने की आज्ञाएँ मिलती हैं।

भगवान बुद्ध के एक शिष्य धनंजय सेठ ने अपनी कन्या के विवाह में इतनी गौयें दहेज में दीं कि इन गौओं के खड़े होने के लिए लगभग डेढ़ सौ हाथ चौड़े और तीन कोस लंबे मैदान की आवश्यकता हुई।

चीनी यात्री व्हेनसांग ने ईसा की 8वीं शताब्दी में होने वाले सम्राट हर्षवर्धन के संबंध में लिखा है—

उनके राज्य में प्राणिहिंसा करनेवालों के लिए कठोर दण्ड था। उन्होंने अपने राज्य में मांस भक्षण ही बंद कर दिया था। गोहत्या और गोमांस भक्षण की तो बात ही क्या।

यहूदी धर्म

यहूदी लोगों में गौ का बड़ा आदर था। उनकी कुछ कथाओं के पढ़ने से ज्ञात होता है कि बहुत ही निपुण गोपालक थे। यहूदियों के धर्मशास्त्र में तो आज्ञा थी कि दावण करते समय बैल के मुँह में जाली मत लगाओ। यहूदी भक्तों की धारणा थी कि याकूब ने एक बछड़े को मारकर उसकी माता गौ को दुःख पहुँचाया था, इसलिए उसका बेटा युसुफ मर गया।

मेसोपोटामिया में सुमेरियन नाम के लोग रहते थे। गौ के लिए सुमेरियन भाषा का शब्द 'गु' है। उनके प्राचीन सिक्कों पर भी गौ के चिह्न अंकित रहते थे। वहाँ तेलओबीद मंदिर की दीवार पर गाय-बैल और ग्वालों के कई चित्र मिलते हैं, जिनमें कहीं गोदोहन हो रहा है तो कहीं दूध बह रहा है। एक चित्र में बैलों का जुलूस है। इन चित्रों से यह अनुमान किया जा सकता है कि सुमेरियन लोग गौ का कितना आदर करते थे। सुमेरी और बेबीलोन प्रदेशों में कुछ वर्ष पूर्व गोवध विरोधी कानून बना दिया गया था।

मिस्र में भी गाय-बैल की पूजा होती थी। उनकी हथोर नाम की देवी गौ ही है। हथेर के समान 'आपिस' वृषभ की भी उपासना की जाती है। पिरामिड और खुदाई से प्राप्त मंदिरों और शिलालेखों से यह ज्ञात होता है कि प्राचीन मिस्र की संस्कृति में गाय और बैलों की उपासना होती थी, मिस्र में गोहत्या नहीं होती थी। गोहत्या करनेवाले को प्राणदण्ड मिलता था। जिस प्रकार हिंदू वैतरणी पार करने के लिए गाय की पूँछ पकड़ते हैं, उसी प्रकार मिस्रवासी गाय की पूँछ पकड़कर नील नदी पार करते हैं।

यूनानियों के गौप्रेम के बारे में कहा जाता है कि जब सिकंदर भारत से लौटकर यूनान जाने लगा था, तो वह अपने साथ एक लाख उत्तम जाति की गौयें यहाँ से ले गया था।

जापान में मशीनों के माध्यम से सिक्के डालकर शीतल पेय की जगह दूध की व्यवस्था उपलब्ध है।

हालैंड, जर्मनी, बेल्जियम, डेनमार्क, आस्ट्रेलिया आदि देश गौ के दूध के उत्पादन में इतने बढ़ गये हैं कि कुछ देशों में दूध की नहरें बहती हैं।

इस्लाम धर्म

इब्न बसउद कथन करते हैं कि पैगंबर ने फरमाया कि परमात्मा ने कोई बीमारी नहीं निर्माण की, जिसकी उसने दवा नहीं पैदा की सिवाय मृत्यु और वृद्धावस्था के। गाय का दूध अवश्य पीया करो, कारण उसमें सब वनस्पति के सत्व होते हैं।

इब्ने और हाकिम अबू नईम ने कथन किया है कि पैगंबर साहब ने फर्माया है कि गाय का दूध सतत पीया करो। कारण यह दवा है और उसका घी रोग मुक्त करता है। गाय के मांस से बचो, कारण उसका मांस बीमारी निर्माण करता है।

अकबर बादशाह ने गोहत्या बंद की थी। गाय का दूध बदन की खूबसूरती और तंदुरुस्ती बढ़ाने का बड़ा जरिया है। हजरत मुहम्मद–बेगम हजरत आयशा से अच्छी तरह पली हुई 90 गायें 16 वर्षों में न सिर्फ 450 गायें और पैदा करती हैं, बल्कि उनसे हजारों रुपये का दूध और खाद भी मिलती है। गाय दौलत की रानी है। –हजरत मुहम्मद। मौला फारुखी द्वारा संकलित 'बरकत और मरकत' से।

निम्नलिखित राजाओं और बुजुर्गों ने गोहत्या बंद करवायी थी। मुगल बादशाह बहादुरशाह के खास पीर मौलवी कुतुबुद्दीन साहब ने फतवा दिया था कि हदीस में कहा है कि जाबेहुल बकर गाय की हत्या करनेवाला कभी बख्शा नहीं जाना चाहिए।

बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, मुहम्मद शाह आलम जैसे शासक के अलावा अब्दुल मुल्क इब्न मरदान सूबेदार ईशक, वाली हुकूमत अफगानिस्तान में सौ से ज्यादा उलेमा अहले सुन्नत के फतवे के मुताबिक गाय की कुर्बानी बंद करवायी।

ब्रिटिश काल में जिन मुसलमान शासकों ने अपनी इन रियासतों में गोहत्या को बंद करवाया था, वे थे—नवाब रावनपुर, नवाब मांगरौल, नवाब दुजाना, करनाल, नवाब गुड़गाँव और नवाब बुर्शिदाबाद।

मौलाना फरुखी लिखित 'खैर व बरकत' से पता चलता है कि शरीफ मक्का ने भी गोहत्या पर पाबंदी लगवायी थी।

मुसलमान को गाय नहीं मारना चाहिए। ऐसा करना हदीस के खिलाफ है। मौलाना हयात साहब खानखाना हाली समीद साहब।

वल्लभ संप्रदाय में गोसेवा

श्री प्रभुदासजी बैरागी श्रीनाथजी का प्राकट्य ही गौमाता के कारण है। एक गौमाता नित्य गिरि-गोवर्धन के ऊपर बने एक टीले पर जाकर अपने दूध का स्राव करती और वह दूध टीले के विविर में प्रविष्ट होकर प्रभु श्री विष्णु के ऊपर सीधा अभिषेक करता। घर पहुँचने पर उस गौमाता के स्तन में दूध नहीं मिलने पर ग्वाले द्वारा उसके दूध की वास्तविकता का पता करते समय उसे श्यामसुंदर प्रभु श्रीनाथजी के इस दिव्य श्रीविग्रह के शुभ दर्शन हुए। ऐसी गौ के द्वारा इस भारत भूतल पर अवतीर्ण हुए वैष्णवों के परमाराध्य प्रभु श्रीनाथजी की सेवा में आज भी गोसेवा की प्रधानता है।

वल्लभाचार्य ने सद्दू पांडे को अपनी सोने की अँगूठी देकर उसकी गौमाताओं में द्वापर युग से श्री नंदरायजी के समय से चले आ रहे गोवंश की एक 'घूमर' नाम वाली गौमाता खरीदी और उसे प्रभु श्रीनाथजी की सेवा में रखा। उस संप्रदाय के अष्टछाप के अंतर्गत प्रभु लीला के कई प्रसंगों में गोरस लीला माध्यम से अनेक स्थलों पर गौ-प्रियता का प्रशस्ति गान किया गया है।

धेनू दुहत देखत हरि ग्वाल
छे मैया री दोहनी दुहि लाउँ गैया
धेनु दुहुत अति की रति बाढ़ी
मैया मैं नहीं माखन खायो। –सूरदास

परमानंददास और छीतस्वामी ने तो विलक्षण उद्‌गार किये हैं—

गोधन पूजें गोधन गावें
गोधन के सेवक संतत हम
गोधन ही को माथे नावें॥
गोधन मात-पिता गुरु गोधन,
देव जानि नित ध्यावें।
गोधन कामधेनु कल्पतरू,
गोधन पै माँगे सोई पावें।
गोधन खिरक खोरि गिरि गहवर,
रखवारो घर वन जहु छावें।
परमानंद भाव तो गोधन,
गोधन को हमहूँ पुनि भावें॥

ब्रजमण्डल में जैसे-जैसे प्रभु श्रीनाथजी के चमत्कार बढ़े और श्री गुंसाईजी का प्रभाव बढ़ा, वैसे-वैसे प्रभु श्रीनाथजी की सेवा में वृद्धि हुई। श्री गुंसाईजी ने ब्रज मण्डल में यत्र-तत्र प्रभु श्रीनाथजी की गौशालाओं की स्थापनाएँ कीं और तत्कालीन मुगल सम्राट अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ से गोचर भूमि भेंट में ली। आज भी उन भूमियों पर दिये गये पट्टे स्थानीय प्रभु मंदिर के श्रीकृष्ण भण्डार में अवलोकनीय हैं।

मुगल सम्राट औरंगजेब के समय वि.सं. 1728 में प्रभु श्रीनाथजी गिरि गोवर्धन छोड़कर मेवाड़ पधारे और इस बीहड़ में अपना वास-स्थान बनाया, जो आज श्रीनाथजी के नाम पर ही 'नाथद्वारा' नगर के नाम से प्रसिद्ध है। श्रीनाथजी के साथ नंदरायजी के घर गोवंश की घूमर गया के वंश की कतिपय गौ मातायें भी ब्रजमण्डल में साथ आयीं। मेवाड़ में विराजमान होने के समय भारत के वल्लभ संप्रदायी वैष्णव नाथद्वारा आने

लगे। असंख्य गौमाताएँ भेंट में आने लगीं। अतः नगर से तीन किलोमीटर दूर नाथूवास नाम स्थल पर एक विराट गौशाला का निर्माण किया गया। यहाँ पर भी गौमाताओं के वास्थान की संकुचितता को देखकर तिलकायित श्रीमानों ने नाथद्वारा के आस-पास बारह गौशालाएँ और बनवा दीं। आज भी वहाँ गौशाला बनी हुई है और गौमाताएँ निवास करती हैं।

आज के युग में द्वापर की छटा को देखना हो तो इस गौशाला में हमें देखने को मिलेगी। विविध रंगी, जाति-जाति की भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वभाव वाली, नुपूर-घुंघरुओं तथा गले में बंधी घंटियों से सुसज्जित असंख्य पयस्विनी गौशालाएँ यहाँ विराजती हैं। गौओं को यहाँ बाँधा नहीं जाता है। वे अपने-अपने अहाते में स्वतंत्र रूप से विचरण करती हैं। प्रत्येक अहाते में पर्याप्त घास तथा बाहर निर्मल जल की कुंड़ियाँ भरी रहती हैं। गौमाताएँ जितना चाहें उतनी घास खाएँ और जितना जल पीना चाहें उतना पीयें—दर्शन मेला लगता है। इस समय वहाँ खेलने वाली गौमाताओं को ग्वालबाल चर्मकुप्पी बजा-बजाकर खेलाते हैं और सबके बाद प्रभु श्रीनाथजी की ओर से समस्त गौमाताओं को गुड़ तथा घी से बनी थूली खिलायी जाती है। इस अवसर पर श्री नंदरायजी के गोवंश की गौमाता के दर्शन भी अत्यंत आह्लादकारी होते हैं। भावुक भक्त आज भी इस वंश की गौमाता के चरण स्पर्श कर इसके नीचे से निकलकर एवं इसकी पूँछ को सिर पर फिराकर प्रमुदित होते रहते हैं।

भगवान ईसा मसीह एक गौशाला में जन्मे थे। इसलिए ईसाई लोग यह भावना समझ सकते हैं। केरल के ईसाइयों ने बाबा विनोबा को पत्र लिखा था कि गोवध बंदी की आपकी जो कल्पना है, उसके साथ हम ईसाई लोग पूर्ण रूप से सहमत हैं। ❑

दृष्टि और सृष्टि

आगे बढ़ने का ठेठ देसी नुस्खा

कोलकाता में एक ओवर ब्रिज बनने के क्रम में धँस गया जिसमें अब तक 27 लोगों के मारे जाने की पुष्टि हो चुकी है। आये दिन इस प्रकार के हादसे होते रहते हैं। पूरी दुनिया में आपदा प्रबंधन की नई-नई तरकीबें व तकनीक विकसित की जा रही हैं। हमारे यहाँ भी देशज तरकीब निकाल ली गयी है। वैसे भी हमारा देश पीछे क्यों रहे। कभी विश्व-गुरु रहे हैं हम, भले किसी ने हमें यह उपाधि दी या नहीं। पर अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने में क्या ऐतराज। आगे बढ़ने का, जमनेका ठेठ देसी नुस्खा है। तो हमारे देश में सबकी भूमिकाएँ तय हैं। पक्ष व विपक्ष दो प्रमुख किरदार हैं। पक्ष की ओर से तुरंत बयान आ जायेगा—कड़ी कार्रवाई और समुचित मुआवजा। दोषियों का पता लगाया जायेगा, किसी को बख्शा नहीं जायेगा, मृतकों को 5 लाख, गंभीर रूप से घायलों को 2 लाख और अगंभीर रूप से घायलों को 1 लाख का मुआवजा देने की घोषणा की जायेगी। विपक्ष का भी एकदम सेट पैटर्न है। झटपट इस्तीफे की, जाँच की माँग, सरकार की दमतक लानत-सलामत। एकाध हफ्ते की कुश्ती के बाद सभी पक्ष अपने-अपने शेष काम में जुट जाते हैं। पीड़ित पक्ष भी मृत आत्माओं को पुल के नीचे से उठाकर सीधे स्वर्ग में लिफ्ट करा देने के लिए दाह-संस्कार में मशगूल हो जाते हैं या फिर घायलों की तीमारदारी में। मृत व घायल माननीय नागरिक सरकारी मुआवजा प्राप्त विशेष जन में तब्दील हो चुके होते हैं। कई प्रकार के प्रेस रत्न एन.जी.ओ. के विजिटर आने लगते हैं।

सबका अपना-अपना हिसाब और किताब है। पर यह रील एक हफ्ते से ज्यादा की नहीं है। द एन्ड होते ही, अगले की ओर मुड़ जाते हैं। यही नूरा-कुश्ती सालों भर चलती रहती है। संसद के अंदर और बाहर भी चलती है, चलती रहती है। जनता भी आनंदित है, भाव विभोर है। कभी इसकी तो उसकी तारीफ में तालियाँ मारते हाथ नहीं थकते। तालियाँ भी ऐसी-वैसी नहीं। हाथ में लोहे का कड़ा हो तो वह भी टूट जाए।

अब देश को इन तालियों के रुकने का इंतजार है। कोलकाता पुल धसान की घटना एक रुटीन घटना बनकर रह जाएगी या विकास के अनिच्छुक शहीदों की सूची को बढ़ाकर दम तोड़ देगी। क्या होगा पता नहीं।

–अरविन्द अंजुम

सर्व सेवा संघ प्रकाशन की नयी पुस्तकें

1. आत्ममंथन की अनिवार्यता
   लेखक : न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी, मूल्य : 60 रुपये, पृष्ठ संख्या-164
2. महिला शांति सेना : क्या, क्यों और कैसे? लेखक : आचार्य राममूर्ति, संपादन : डॉ0 रामजी सिंह, मूल्य : 40 रुपये, पृष्ठ संख्या-78।

नोट : आप सीधे प्रकाशन से उपरोक्त पुस्तकों को प्राप्त कर सकते हैं।

पता : संयोजक, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-221001

फोन : 0542-2440385/2440223

देशद्रोही कौन?

❑ किशनगिरि गोस्वामी

जब-जब ईसा सूली चढ़ते, जब-जब गांधी गोली खाते,
बलिदानों की ज्योति शिखा को, जब-जब लूथर किंग जलाते।
दीवारों में भरे जहर को, जब कोई शिव पी लेता है,
मेरी श्रद्धा नहीं जनमती, मेरे गीत वहीं उग आते।

आजकल देश में चल रही मोदी सरकार के मंत्री, सांसद, विधायक एवं आर.एस.एस. व उसके अनुषांगिक विभिन्न संगठनों के पदाधिकारीगण प्रतिदिन न जाने कितने व्यक्तियों को 'देशद्रोही' होने का तमगा देने में किंचित भी संकोच नहीं कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि अब देशप्रेमी होने का प्रमाण-पत्र देने का अधिकार एकमात्र उनके पास ही है। शायद उन्होंने अमरीका से इसका पेटेन्ट करा लिया है। उनकी नजर में हैदराबाद युनिवर्सिटी में आत्महत्या करनेवाला छात्र रोहित वेमुला भी देशद्रोही है, जो अपने अन्तिम पत्र में लिखता है—''इस बात को समझने की कोशिश करिये कि मैं जीने से ज्यादा मरने में खुश हूँ।'' उसके इस वाक्य पर कहाँ तो देश की सरकार को शर्मसार होना चाहिए था, लेकिन वहाँ तो देश की शिक्षामंत्री उसके अनुसूचित जाति का होने पर प्रश्नचिन्ह लगा रही हैं।

इन लोगों के अनुसार जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्रसंघ का अध्यक्ष कन्हैया कुमार भी देशद्रोही है, जबकि अब तलक उसके विरूद्ध इस आरोप का कोई प्रमाण नहीं मिला है। जे.एन.यू. में देश विरोधी नारे लगानेवालों के वीडियो फुटेज मिलने के बावजूद असली अपराधियों को इसलिए नहीं पकड़ा जा रहा है, क्योंकि वे कश्मीरी हैं, अतः उनको पकड़ने पर पी.डी.पी. के नाराज होने पर वे कश्मीर में सत्ता का स्वाद चखने से महरुम हो जायेंगे। आज तक कांग्रेस एवं वामदलों के किसी भी नेता ने जे.एन.यू. में देश विरोधी नारे लगाने का कोई पक्ष नहीं लिया है। वे तो मात्र निरपराध छात्रों को जानबूझकर जबरन देशद्रोही बताने का ही विरोध कर रहे हैं। निरपराध के साथ न्याय हो, इस बात को दृढ़ता से कहने पर कांग्रेस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राहुल गांधी को सरेआम फाँसी पर लटका देने का बयान देने वाले एवं राष्ट्रपिता गांधी के हत्यारे गोडसे की पूजा करनेवाले देशप्रेमी कहला रहे हैं। इस पर स्मरण आना स्वाभाविक है कि राक्षस भी रावण का पुतला जला रहे हैं, देवगण भी राम पर प्रश्नचिन्ह लगा रहे हैं, राजनीति है भाई अपनी-अपनी।

कन्हैया कुमार की जीभ काटने पर पाँच लाख रुपये एवं गोली मारने पर ग्यारह लाख रुपये ईनाम देने की खुलेआम घोषणाएँ हो रही हैं और सरकार कान में तेल डाल कर बैठी है—

वह बोलता नहीं है और सुनता भी नहीं है,
जरूर वजीरे-आजम के खानदान का होगा।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्रसंघ अध्यक्षा को इसलिए प्रताड़ित एवं निकाले जाने की कार्यवाही की जा रही है कि उसने विश्वविद्यालय की अव्यवस्थाओं को उजागर किया एवं मोदी सरकार विरोधी बयान दिये। आज सरकार के विरोध को 'प्रमाणित देशद्रोह' माना जा रहा है। गुजरात में हार्दिक पटेल का कथित हिंसात्मक बयान देशद्रोह बन जाता है, लेकिन हरियाणा के जाटों द्वारा मुनार नहर से दिल्ली के डेढ़ करोड़ लोगों का पानी रोक कर, उन्हें प्यासा मारने की साजिश देशद्रोह की श्रेणी में नहीं आती। क्षतिग्रस्त नहर को ठीक करने में एक माह का समय लगेगा, क्या यह देशद्रोह नहीं है? अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों एवं मानवता के नाते भी कोई शत्रु देश भी दूसरे देश का पानी नहीं रोक सकता। हम पाकिस्तान को सिन्धु नदी से एवं चीन को ब्रह्मपुत्र नदी से पानी जाने से नहीं रोक सकते। क्या हम इतने क्रूर एवं निर्दयी हैं कि अपने ही बच्चों, माता-पिता, भाई-बहनों तथा पड़ोसियों को प्यासा मार देंगे? पीने का पानी रोकने वाले मनुष्य कहलाने के भी लायक नहीं है। क्या यह देशद्रोह नहीं है?

जाट आरक्षण हिंसा से अब तक पचास हजार करोड़ रुपये से भी अधिक का नुकसान हो चुका है, क्या यह देशद्रोह नहीं है? हिंसा में 19 लोगों की जान गयी एवं सैकड़ों घायल हुए, लेकिन सरकार के पास किसी की गिरफ्तारी के लिए कोई कारण नहीं है? वैसे हरियाणा के मुख्यमंत्री ने सारे नुकसान की भरपाई का वादा किया है (जो कालेधन के आने पर हरेक की जेब में 15 लाख रुपये आने के समान एक जुमला ही साबित होने वाला है) किन्तु इसमें कहीं भी इस बात का जिक्र नहीं है कि दिल्ली का पानी रोकने एवं बसों, रेलवे को नुकसान पहुँचाने वालों पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया जायेगा। क्योंकि ऐसा करने पर वोट बैंक खिसकने का खतरा उत्पन्न हो जाता है।

इस देश में यदि नकसलवादी रेल की पटरियाँ उखाड़ते हैं तो वे देशद्रोही और देश के सबसे बड़े दुश्मन हैं, किन्तु यदि जाट, गुर्जर या और कोई जति विशेष ऐसा करते हैं, तो वे मात्र अपराधी हैं, देश के दुश्मन नहीं। इस दोहरी मानसिकता के मायने क्या हैं? तमाम विरोधाभासों के बावजूद यह कहा जा सकता है कि हार्दिक पटेल के नेतृत्व में →

कुछ अद्भुत अनुभूत योग

❑ वैद्य बजरंग दास गोयल

आँवले का मुरब्बा गर्मी के रोगों के लिए अच्छा है। यदि प्रवाल पिष्टी या प्रवाल भस्म 2 रत्ती से 4 रत्ती डालकर खायें तो कैल्शियम की कमी दूर हो तथा बच्चों का कद (लम्बाई) बढ़ेगा।

गठिया रोगी एक सेब रोज खायें या एक सेब अच्छी क्वालिटी का लेकर उसमें 10 ग्राम लौंग टोपी वाला लेकर चारों तरफ गाड़ दें। सेब डण्डी वाला ही लें। लौंग 1-1 करके गड़ाते रहें तथा उसको मक्खियाँ न लगें, चींटियाँ न लगें, इसका ध्यान रखें। तीन दिन बाद सबेरे, दोपहर व शाम 1-1 लौंग टोपी उतार कर वात रोगी को चूसने को दें। ईश्वर कृपा से आयुर्वेद का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलेगा। पेट साफ रखें।

गैस ज्यादा बनती है, कमजोरी है, हाथ-पाँव में कमजोरी या सिर में चक्कर आते हों–लहसुन दाना (कश्मीरी) या देसी लहसुन की दो कली लेकर पानी से निगल जावें।

नाक से खून गिरना—किशमिश 20 नग, धनिया 5 ग्राम, मिश्री 10 ग्राम रात को 100 ग्राम पानी में भिगोकर रख दें। सबेरे छानकर पिलावें। नकसीर ठीक हो।

पेचिश (दस्त लगने पर) में दही, इसबगोल का बुरादा लें। कर्पूर रस की गोली अच्छी फार्मेसी की सुबह दोपहर शाम 1-1 गोली पानी से लें। खाली पेट दवा न लें। यदि दस्तों में खून आता है तो बिल्व फल का चूर्ण पानी अथवा दही से लें।

आँव गिरना, बार-बार दस्त (टट्टियाँ) आना - बिल्व फल, मीठा नीम के पत्ते तथा दुद्धी बूटी इन तीनों को बराबर लेकर बनाया गया चूर्ण 3-3 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम भोजनोपरान्त पानी के साथ दें।

बहरापन, कानों में आवाज आना–पुठकण्डा (अपामार्ग) के पंचाङ्ग को भिगोकर कूट-पीसकर सरसों के तेल में पकावें, तेल मात्र शेष रहने पर शीशी में रखें। सबेरे-शाम 2-2 बूँद कान में डालें।

शरीर में यूरिक एसिड बढ़ गया तो उसको कम करने के लिए गाजर का जूस पीवें या मीठी अश्वगन्धा, सोंठ, गौक्षुर समान भाग लेकर कूट लें। 3-4 ग्राम सुबह-शाम गर्म पानी से लें तथा टेस्ट करवायें। यूरिया कम होगा तथा वात रोगों में लाभ मिलेगा। सैकड़ों बार का अनुभूत है।

चेचक निकलने के बाद यदि काफी निशान चेहरे पर बाकी हों तो पिस्ता का तेल लगावें। अवश्य लाभ मिलेगा।

खून पतला करने के लिए—आप एलोपैथिक दवाई 'एस्प्रिन' लेते हों उसकी जगह आपके घर में देसी अजवायन मिलेगी। 1-1 ग्राम देसी अजवायन प्रतिदिन पानी के साथ सेवन करें। यह बात-कफ को दूर कर खून को पतला करेगी। आयुर्वेदिक में अजवायन का स्थान काफी ऊँचा है।

धरण (नाभि का गिरना)–आजकल यह आम शिकायत है। पेट की गड़बड़ी, समय पर भोजन न करना, कच्चा-पक्का खाना, सैर न करना। नाभि में बर्फ का छोटा टुकड़ा रखकर कपड़ा ढँककर 2 मिनट लेट जावें। नाभि फौरन ठीक होगी।

घर में मिट्टी के बर्तन में दही जमावें। जितनी खा सकें 500 ग्राम तक लेकर उसमें अच्छी हल्दी एक चम्मच डालकर खाली पेट सेवन करें। 2-4 घण्टे बाद भोजन करें। इस प्रकार तीन दिन करें।

अर्द्धसर्वांग आसन करें। पेट साफ रखें।

पेट दर्द, फारा, एसिडिटी, कब्ज में उपयोगी–राई 50 ग्राम, काला नमक 50 ग्राम, नौशादर 50 ग्राम, मीठा सोडा 50 ग्राम सबको कूट-छानकर काँच की शीशी में रखें। एसिडिटी में 2-2 ग्राम चूर्ण पानी से लें। कब्ज हो तो 5 ग्राम तक गर्म पानी से लें।

नोटः हाई बी.पी. वाले इसे न लें। नमक की मात्रा अधिक है। ❑

→

पटेल आरक्षण आंदोलन अपने मूल चरित्र में हिंसक नहीं था। वहाँ उकसाने वाली कार्यवाही गुजरात सरकार की तरफ से होनी बतायी गयी है। गुजरात के आंदोलन ने यह साबित किया कि सरकार अहिंसा का सम्मान नहीं करती और हरियाणा का उदाहरण है कि सरकार हिंसा से डरती है। यह हमारे लोकतंत्र के लिए निश्चित रूप से अच्छा संकेत नहीं है।

हरियाणा को आरक्षण की आग में झोंकने का काम उन लोगों ने किया जो हर तरह से समृद्ध और ताकतवर हैं। अतः अब इस देश की जनता को ही यह तय करना है कि इस देश को आग कौन लगा रहा है? विश्वविद्यालय के चन्द छात्र, जिनकी अक्ल ठिकाने लगाने के लिए एक थानेदार एवं चार सिपाही ही काफी हैं, या वह हिंसक भीड़ जिसने आरक्षण के नाम पर देश के पचास हजार करोड़ रुपये स्वाहा कर दिये? पता नहीं क्यों, जब हरियाणा जल रहा था, तब इन तथाकथित 'देशभक्तों' को कैसे साँप सूँघ गया था। अगर जे.एन.यू. के छात्र मात्र नारेबाजी करने पर देशद्रोही हैं (जबकि कश्मीर में ऐसी नारेबाजी रोज हो रही है) तो देश की हजारों करोड़ रुपये की सम्पत्ति को खाक करनेवाले देशप्रेमी कैसे हो गये? अगर बिना जमीर का होना देशप्रेम है तो इससे राष्ट्र की सुरक्षा को गंभीर खतरा है। ❑

असली नमक : सेंधा नमक

❑ वैद्य विनायकराव मोरे

आयोडीन तो उड़नशील पदार्थ है जो झट-से हवा में घुल जाता है, फिर ऐसे इश्तिहारों द्वारा लोगों को गुमराह कर उनके स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ क्यों किया जाता है?

मैं समझता हूँ कि यह नमक अत्यन्त नुकसानदायक है। समुद्र में से प्राप्त इस नमक को 'समुद्री लवण' या 'समुद्र नमक' के नाम से आयुर्वेद में पहचाना जाता है। सारे विश्व की गन्दगी नदी-नालों-गटरों द्वारा समुद्र में जाकर मिलती है। रात-दिन चलनेवाले बड़े-बड़े कल-कारखानों, मिलों व केमिकल इण्डस्ट्रीज में से निकलनेवाला गन्दा पानी, कूड़ा-कचरा तथा समस्त वैश्विक नदियों का दूषित जल भी समुद्र में जाकर मिलता है।

भगवान सूर्यनारायण की गति और गर्मी से पूर्णमासी और अमावस के दिन होनेवाले ज्वारभाटे से समुद्र का पानी समुद्र तट पर तैयार किये अगरों (नमक के खेतों) में एकत्र किया जाता है। यह सूर्य की गर्मी से सूख कर पाउडर बन जाता है। यह द्रव्य ही समुद्र लवण है। नमक के व्यापार से जुड़े हुए उद्योगपति इसमें अपने तरीकों से आयोडीन मिलाकर शुद्ध करके बाजार में रखते हैं और उनका ही नमक सर्वश्रेष्ठ एवं आरोग्यकारक है। ऐसा जबरन लोगों के दिमाग में टी.वी., रेडियो, न्यूज पेपर आदि विज्ञापन माध्यमों से ठूँसने का ठोस प्रयास करके दिन-दहाड़े लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करते हैं।

अपनी दृष्टि से मैं स्पष्ट मानता हूँ कि यह समुद्र नमक आज की परिस्थिति में आरोग्यदायक नहीं है। पहले के जमाने में यानी कि भूतकाल में इतनी सारी गन्दगी समुद्र में नहीं छोड़ी जाती थी। इतने सारे उद्योग भी नहीं थे। तो भले ही उस जमाने में समुद्र लवण का उपयोग होता था। किन्तु आज के हालात में जब सारा विश्व जानलेवा बीमारियों से घिरा हुआ है, तब यह नमक हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए। यह मेरा अपना निजी अभिप्राय है।

नमक के बिना रसोई का स्वाद आता ही नहीं। भोजन में लवण अनिवार्य है, तो फिर कौन सा नमक हमेशा के लिए प्रयोग करना चाहिए; जो स्वास्थ्यप्रद भी हो और हानिकारक भी न हो तथा जिसमें समुद्री लवण जैसी गन्दगी न तो मेरे विचार से सेंधा या सैन्धव नमक ही इसके लिए सर्वश्रेष्ठ है।

सैन्धव नमक में समुद्र के नमक जैसी गन्दगी बिल्कुल नहीं होती। केवल वनस्पति, पेड़-पौधों के पत्तों का कचरा ही ज्यादा होता है और उस पर चन्द्रमा का प्रकाश पड़ते रहने की वजह से शीतल, ठण्डा, शीतवीर्य है। इसकी उत्पत्ति राजस्थान, पंजाब आदि राज्यों में पत्थर की खदानों से है। विभाजन के पहले यह सिंध प्रान्त से ज्यादा मिलता था। अब सिंध प्रदेश पाकिस्तान में है। यह सिंध से प्राप्त होता था, इसीलिए इसको सैन्धव नमक के नाम से जाना जाता है। एकादशी, पूर्णमासी, शिवरात्रि आदि पवित्र उपवास के दिनों में तथा भगवान् के नैवेद्य के भोग में सैन्धव का ही उपयोग होता है। इसलिए इसको उपवासी नमक या फरहारी नमक भी कहते हैं।

समुद्र लवण से रक्त का पानी बनना, उच्च रक्तचाप (High B.P.), आँखों की रोशनी कम होना, हड्डियाँ घिस जाना, गुर्दे (Kidney) बिगड़ना, आँतों में अल्सर होना आदि कई बीमारियाँ होती हैं।

जबकि सैन्धव या सेंधा नमक मधुर, स्निग्ध, पाचक, अग्नि को प्रदीप्त करने वाला, भूख लगाने वाला, अन्न को पचाने वाला, रुचिकर, शीतवीर्य, सुखकारक, वातपित्त एवं कफ की विकृतियाँ दूर करने वाला, सम्भोग शक्ति (Sex Tonic) बढ़ाने वाला तथा आँखों के लिए हितकारी है।

निघण्टु रत्नाकर ग्रन्थ में बताया है कि–

सैंधवं रुचिदं वृष्यं चक्षुष्यं चाग्निदीपनम्।
शुद्धं स्वादुलघुस्निग्धं पाचनं शीतलं अथः॥
अविदाहितु सूक्ष्मश्च हृद्यं चैव त्रिदोषहम्।
व्रणदोषपमलस्तम्भं हृद्रोगं चैव नाशयेत्॥

ऐसे ही भावप्रकाश में भी भावमिश्र जी ने कहा है कि–

सैन्धवं लवणं स्वादु दीपनं पाचनं लघु।
स्निग्धं रुच्यं हिमं वृष्यं सूक्ष्मं नेत्र्यं त्रिदोषहृत्॥

यानी कि सैन्धव नमक मधुर, रुचिकर, जीवनी शक्ति को बढ़ाने वाला, दीपन, पाचन, शुद्ध, स्वादिष्ट, स्निग्ध, शीतवीर्य और पचने में हल्का है। वात, पित्त, कफ की विकृति को दूर करने वाला, विदाही, सूक्ष्म, हृदय के लिए हितकारी, घाव को भरने वाला (व्रण रोपण), मलावरोध तथा हृदय रोग को नष्ट करने वाला है वृक्क यानी किडनी के रोगों में भी इसका उपयोग हो सकता है।

इतनी सारी सैन्धव (सेंधा नमक) की विशेषताएँ, गुण-दोष, उपयोग जानने के बाद आप क्या सोचते हैं? फेंक दें आज का आयोडाइज नमक और लाएँ, अपनाएँ सेंधा नमक, जो आपका, आपके कुटुम्ब का स्वास्थ्य सौ प्रतिशत रक्षण करेगा।

मैं अपने घर में पिछले पचीस साल से सेंधा नमक ही इस्तेमाल करता हूँ और मेरे चिकित्सार्थ आने वाले सैकड़ों रुग्णों के हमेशा के लिए समुद्र लवण छुड़वा कर मैंने सैन्धव नमक उपयोग करना सिखा दिया है। सीनियर सिटीजन बुजुर्गों को इसके विषय में गम्भीरता से सोचकर इसका उपयोग और प्रचार-प्रसार करना चाहिए, क्योंकि 70 वर्ष से ऊपर की उम्र वाले सामान्य तथा उच्च रक्तचाप के 80 प्रतिशत मरीज होते हैं, इनमें 10 →

राष्ट्र एवं धर्म के नाम पर फैलाया जा रहा उन्माद

न देश के लिए हितकारी है, न धर्म के लिए

मौड़ीग्राम (हावड़ा) में दिनांक 25-26 फरवरी, 2016 को सर्व सेवा संघ (अखिल भारत सर्वोदय मंडल) की सम्पन्न राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति ने पिछले दिनों देश में तेजी से बढ़ रही अप्रिय घटनाओं पर दुःख एवं चिंता व्यक्त की है। चाहे ये घटनाएँ अतिवादी एवं अनुत्तरदायी आलोचनाओं का हों, साम्प्रदायिक हमलों एवं शिक्षण संस्थाओं की स्वायत्तता को नियंत्रित करने से संबंधित हों, हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्र रोहित वेमुला की आत्महत्या की हो या जे.एन.यू. परिसर की हो, हम सब इनसे स्तब्ध एवं मर्माहत हैं।

जे.एन.यू. परिसर में एक कार्यक्रम के दौरान भारत की बरबादी की कामना से प्रेरित नारे लगाना सर्वथा गलत है, पर उसके बाद देशभक्ति के प्रमाण पत्र बाँटने की जो होड़ मची है, वह देश के लोकतंत्र समर्थक नागरिकों की चिंता को बढ़ानेवाला है। पटियाला हाऊस न्यायालय में पुलिस की उपस्थिति में छात्रों एवं पत्रकारों पर किये गये हमले गहरे साजिश की ओर इशारा करती है।

देशभक्ति के नाम पर बन रहे इस अराजक माहौल से नागरिकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता खतरे में पड़ गयी है। लोकतंत्र की जड़ों को हिला देनेवाले इन कृत्यों से एक अघोषित आपातकाल जैसी स्थिति का आभास होता है। ज्ञात हो कि देशद्रोह का यह कानून अंग्रेजों ने औपनिवेशक हित की रक्षा तथा भारतवासियों के दमन के लिए बनाया था, इसका स्वतंत्र भारत में आज भी उपयोग हो रहा है। इस कानून पर नये सिरे से विचार करने की आवश्यकता है।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण का यह कथन हम सबके लिए मार्गदर्शक है :

''.... ....स्वतंत्रता मेरे जीवन का एक आकाशदीप बनी, जो आज तक वैसी ही बनी हुई है। कालान्तर में यह स्वतंत्रता अपने देश की स्वतंत्रता मात्र के भाव का अतिक्रमण करके मनुष्य की सब जगह और सब प्रकार के बंधनों से मुक्ति ही नहीं, बल्कि इससे भी आगे बढ़कर मानवीय व्यक्तित्व की स्वतंत्रता, विचार की स्वतंत्रता, आत्मा की स्वतंत्रता की अर्थदात्री बन गयी।

स्वतंत्रता मेरे जीवन की निष्ठा बन गयी है। मैं रोटी के लिए, सत्ता के लिए, सुरक्षा के लिए, समृद्धि के लिए, राज्य की प्रतिष्ठा के लिए या किसी अन्य वस्तु के लिए इसके साथ समझौता नहीं कर सकता।''

सर्व सेवा संघ गांधी, विनोबा और जयप्रकाश के उदात्त विचारों एवं विरासत को संजोने व विकसित करनेवाला संगठन है। हम संकीर्ण राष्ट्रवाद और धर्मवाद की संकल्पना को अमान्य करते हैं। राष्ट्र एवं धर्म के नाम पर फैलाया जा रहा यह उन्माद न देश के लिए हितकारी है, न धर्म के लिए।

इस सम्बन्ध में **आचार्य विनोबा** की उक्ति पूरी दुनिया के लिए आदर्श है–

''हम किसी देश-विशेष के अभिमानी नहीं
किसी धर्म-विशेष के आग्रही नहीं
किसी भी जाति-विशेष से बद्ध नहीं
सद्विचारों को आत्मसात करना—यह हमारा धर्म।
विविध विशेषताओं में सामंजस्य प्रस्थापित करना, विश्व वृत्ति का विकास करना—यह हमारी वैचारिक साधना।''

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष **श्री महादेव विद्रोही** ने इन घटनाओं को रोकने के लिए सभी पक्षों एवं सजग नागरिकों से सकारात्मक पहल एवं संवाद का आह्वान किया है।

इस संदर्भ में सर्व सेवा संघ एवं साथी संगठनों की ओर से 5 एवं 6 अप्रैल, 2016 को दिल्ली के राजघाट में 36 घंटे के उपवास करने का निर्णय किया है। ज्ञातव्य है कि 6 अप्रैल नमक सत्याग्रह दिवस है। उसी दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने नमक बनाकर सत्याग्रह किया था। इसके कारण अंग्रेजी सल्तनत की नींव हिल गई थी।

–भवानी शंकर कुसम
राष्ट्रीय प्रवक्ता, सर्व सेवा संघ

→ प्रतिशत लोगों की तो हार्ट सर्जरी, एन्जियों प्लास्टी भी हुई होती है।

इसके अतिरिक्त कमर में दर्द (Lumber Spondiolytis), घुटनों में दर्द, गर्दन में दर्द (Cervical Pain), अपचन, पेट में गैस, बद्धकोष्ठ, आँखों की कमजोरी आदि व्याधियों से पीड़ित होते हैं। इन सभी के लिए सेंधा नमक ही श्रेष्ठ है। हमारे शरीर में नाभि की बाँयीं ओर पेट में तिल जितनी अग्नि होती है, जिसे जठराग्नि या पाचकाग्नि कहते हैं। यही अग्नि भगवान् का साक्षात स्वरूप है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में स्वमुख से कहा है कि–

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणपानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्॥

अर्थात् मैं प्राणियों की देह में रहकर वैश्वानरा अग्नि का रूप लेकर प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान वायु को नियम में रखकर चार प्रकार का अन्न (चूसा हुआ, चाटा हुआ, चबाया हुआ और पीया हुआ) पचाता हूँ। तो फिर अब हमें क्या करना है? हमें प्रतिज्ञा करनी है–शरीरस्थ भगवान् की आराधना करते हुए सेंधा नमक ही अपनाकर शरीर-मन-बुद्धि को स्वस्थ रखने की।

असली नमक सेंधा नमक!
आयोडाइज नमका झूठा नमक!! ❑

केला एवं उसके औषधीय गुण

❑ डॉ. योगेन्द्र यादव

केला एक ऐसा फल है, जो हर मौसम में देश के हर कोने में पाया जाता है। यह जरूर है कि जब इसका सीजन होता है, तब यह इस देश की गरीब जनता की पहुँच के भीतर होता है, जब यह महँगा हो जाता है, तब उसकी हैसियत इसे खरीदने की नहीं होती है। जैसा कि हम जानते हैं कि इस देश में पैदा होने वाले हर फल में कोई न कोई औषधीय गुण अवश्य होते हैं। जिसके कारण इन फलों का उपयोग अनादिकाल से औषधी के रूप में होता रहा है। आज की चकाचौंध की जिन्दगी में हम इसका उपयोग पौष्टिकता के कारण करते हैं। लेकिन यदि इसकी औषधीय गुणों के बारे में लोगों को ज्ञान हो जाए, तो ये फल सेहत बनाने के साथ-साथ निरोगी भी बनाने लगेंगे। इस लेख को लिखने के पहले मैंने कई आयुर्वेद की पुस्तकें पढ़ी और कई आयुर्वेदाचार्यों से बात भी की। उसके आधार पर ही मैं यह जानकारी आप तक पहुँचा पा रहा हूँ। मेरी खुद की रुचि इस तरह के कामों के प्रति है। इसका भी कई कारण माना जा सकता है।

1. एनीमिया में उपयोगी–जो लोग एनीमिया के शिकार हो जाते हैं यानी उनके शरीर में खून की कमी हो जाती है, उनके लिए केला बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। केले में लौह तत्त्व एवं मैगनीज प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो रक्त में हिमोग्लोबिन की वृद्धि में सहायक होता है। इसलिए इस प्रकार के रोगी को प्रतिदिन कम से कम दो केला खाकर ऊपर से एक गिलास दूध पीना चाहिए य केले का पेस्ट बनाकर उसमें दूध मिलाकर खाना चाहिए। केले की खीर बनाकर खाने से भी लाभ होता है। किन्तु इस खीर में चीनी के अलावा किशमिश और छोटी इलायची अवश्य डालनी चाहिए।

2.सरदर्द में उपयोगी–जिन्हें अक्सर सरदर्द की शिकायत होती है। उन्हें पके केले को छोटे-टोटे टुकड़े के रूप में काट लेना चाहिए। उसमें सोंठ का बारीक चूर्ण मिलाकर खाने के पश्चात एक गिलास दूध पी लेना चाहिए। इससे सरदर्द दूर हो जाता है।

3. हाई ब्लडप्रेशर में उपयोगी–हाई ब्लड प्रेशर के रोगियों के लिए नियमित रूप से केले का सेवन करना लाभप्रद होता है। यदि रोगी खाना खाने के पश्चात् एक केला खाता है तो हाई ब्लड प्रेशर की बीमारी से उसे निजात मिल जाती है।

4. याददाश्त बढ़ाने में उपयोगी–जो लोग लिखने-पढ़ने-सोचने का काम करते हैं, उन्हें नियमित रूप से केले का सेवन करना चाहिए, इससे उनकी स्मरण शक्ति में ह्रास नहीं होगा। इस तरह के लोगों को केले के छोटे-छोटे टुकड़े कर लेना चाहिए। उसमें शहद मिलाकर खूब चबा-चबाकर खाना चाहिए। खाने के पश्चात एक गिलास गाय का दूध पीना चाहिए। छोटे बच्चों का मानसिक विकास ठीक से हो, इसलिए उन्हें भी उम्र के हिसाब से शहद में मिला हुआ केला खिलाना चाहिए और बाद में गाय का हल्का गर्म दूध पिलाना चाहिए।

5. हृदय रोग में उपयोगी–आजकल किसको कब हार्ट अटैक हो जायेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। लेकिन यदि लोग औषधि के रूप में केले का उपयोग अपने भोजन में करें, तो वे इस रोग की जकड़न से बच सकते हैं, यदि किसी हृदय रोगी को बेचैनी महसूस हो और वह तुरंत केले और शहद को मिश्रित करके खा ले, तो वह हार्ट अटैक से निजात पा सकता है।

6. सूजन निजात में सहायक–अपनी प्रकृति के विरूद्ध भोजन करने के कारण शरीर में सूजन हो जाती है। अनभिज्ञता वश जिसे लोग मोटापा समझ बैठते हैं। लेकिन ऐसे रोगियों को ताकत का एहसास नहीं होता है। इस प्रकार के रोगियों के लिए केला बहुत ही लाभदायक होता है। इस प्रकार के रोगियों को पके केले को आटा के साथ गूँथ कर सूजन के स्थान पर तवे पर गर्म करके बाँधना चाहिए। इससे लाभ होता है।

7. बहुमूत्र रोगी के लिए उपयोगी–यह रोग उम्रदराज लोगों में ज्यादा पाया जाता है। इस प्रकार के रोगी कई बार बिस्तर गीला कर देते हैं। यदि यह बीमारी मधुमेह रोग के कारण न हो तो शतावरी और बिदवारी कंद बराबर मात्रा में लेकर उसका चूर्ण बना लें और एक केले में तीन ग्राम यह चूर्ण मिलाकर सेवन करें और अंत में गाय का गर्म दूध पीयें, लाभ होता है।

8. पेशाब जलन में उपयोगी–यदि किसी को पेशाब में जलन होती हो तो उस रोगी को केले के तने को कूटकर उसका रस निकाल लेना चाहिए और उसे गोमूत्र में मिलाकर उसका सेवन करने से यह रोग ठीक हो जाता है।

9. मूत्र के अवरोध होने पर कारगर–यदि किसी रोगी का पेशाब रुक जाता हो या रुक-रुक कर पेशाब होता हो, ऐसे में उस रोगी को केले के तने को कूटकर उससे रस निकाल लेना चाहिए और उसे शुद्ध देशी घी में मिलाकर उपयोग करने से तुरंत खुलकर पेशाब होने लगता है।

10. नकसीर में कारगर–अब गर्मी का मोसम आ गया है। इस मौसम में नाक से खून आने की शिकायत आम हो जाती है। यदि सर पर शीतल जल डालने से नाक से खून बहना न बंद हो तो उस रोगी को केले

को आग में भूनकर सुबह-शाम सेवन करना चाहिए। लाभ होगा या पके केले में मिश्री मिलाकर खाने के पश्चात् एक सप्ताह दूध पीने से लाभ होता है।

11. अस्थमा रोग में लाभदायक– अस्थमा रोगियों को केले के ताजे फूल को सिरस व कुंद के फूलों को एक साथ सील-बट्टे पर पीसकर उसमें थोड़ा पीपल का चूर्ण मिलाकर चावल जल के साथ सेवन करने से अस्थमा ठीक हो जाता है। केले का नियमित शरबत पीने से भी अस्थमा रोगी को लाभ होता है।

12. नेत्रों की रोशनी में सहायक– चूँकि केले में फास्फोरस एवं बिटामिन सी भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, इसलिए यदि कोई नियमित रूप से केले का सेवन करता है तो उसे चश्मा नहीं लगता।

13. पीलिया रोग में सहायक– पीलिया रोगी यदि केले का पेस्ट बनाकर उसका शहद के साथ नियमित रूप से सेवन करता है तो पीलिया के प्रकोप से उसे निजात मिल जाती है।

14. विष उतारने में सहायक–यदि किसी को बिच्छु या साँप काट ले, ऐसी दशा में केले के तने में छेद करके उसका जल निकाल लेना चाहिए और केले की जड़ को सुखाकर पाउडर बना लेना चाहिए। कटे हुए जगह पर उस जल में चूर्ण मिलकर लगाने से लाभ होता है।

15. टूटते बालों को रोकने में सहायक–यदि किसी स्त्री या पुरुष के बाल जल्दी-जल्दी टूट रहे हों ऐसी दशा में यदि वह केले के गूदे को नीबू के रस में मिलाकर बालों की जड़ों में लगाता है तो उसके बाल झड़ने बंद हो जाते हैं।

16. आग से जलने पर–ऐसे व्यक्ति को जो आग से जल गया हो और उसके फफोले पड़ गये हों, इस दशा में केले के मुलायम पत्ते पर एरंड का तेल लगाकर बाँधने से फफोले जल्दी पिचक जाते हैं और जलने के निशान भी शरीर पर नहीं बनता है।

17. बच्चों के दस्त में लाभकारी– यदि बच्चे को दस्त आ रही हो। ऐसी दशा में पके केले के गूदे को मसल कर उसमें थोड़ी सी मिश्री मिलाकर देने से बच्चे के दस्त बंद हो जाते हैं। दस्त बंद हो जाने के बाद भी कुछ दिन उसे खिलाते रहना चाहिए, इससे उसका स्वास्थ्य भी सुधर जाता है।

18. यौन रोगियों के लिए लाभकारी–यौन रोगियों के लिए केला बहुत ही लाभकारी सिद्ध होता है। केले के छोटे-छोटे टुकड़े को घी में मिलाकर खाने से सभी प्रकार के धातु विकार नष्ट हो जाते हैं। प्रतिदिन दो केले खाने से वीर्य गाढ़ा होता है और शीघ्रपतन की बीमारी से भी छुटकारा मिलता है। हस्तमैथुन के कारण आयी दुर्बलता को दूर करने के लिए केले को शहद के साथ नियमित सेवन करना चाहिए।

19. स्त्री जनित रोगों के लिए रामबाण–श्वेत प्रदर से लेकर अधिक मैथुन या बच्चे पैदा होने से आई कमजोरी और शारीरिक विकृति को दूर करने के लिए नियमित रूप से केला खाना एक रामबाण औषधी है। इससे बाँझपन की शिकायत औरतों को भी फायदा होता है। यानी यदि वे केले का सेवन किसी विशेषज्ञ की देख-रेख में करती हैं, तो उन्हें मातृत्व सुख की प्राप्ति हो सकती है। ❑

युवाओं को एकता का संदेश

❑ डॉ0 सुब्बाराव

''विविधता में एकता भारत की सबसे बड़ी विशेषता है। यहाँ भिन्न भाषा एवं धर्म के लोग रहते हैं लेकिन उनमें जो एकता का भाव है वहीं देश को अखण्ड रखे हुए है। देश में बढ़ती हिंसा से एकता को सबसे बड़ा खतरा है। आज जरूरत इस बात की है कि हम राष्ट्रीय एकता का गुणगान करें एवं एक रहने का संकल्प लें। यह विचार विख्यात गांधीवादी एवं राष्ट्रीय युवा योजना के निर्देशक डॉ0 एस0सन0सुब्बाराव ने व्यक्त किये। 11 मार्च 2016 को गांधी शांति प्रतिष्ठान केंद्र, जोधपुर की ओर से गांधी भवन में आयोजित 'देश की वर्तमान परिस्थितियों में युवाओं की भूमिका' विषयक संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि देश के युवाओं को एक घण्टा देश को देने का संकल्प करना चाहिए ताकि व्यक्ति एवं राष्ट्र दोनों शक्तिशाली बनें। देश के नौजवान एकता का संदेश लेकर गाँव-गाँव जायें और रचनात्मक कार्यक्रमों में अपना खून-पसीना लगायें तभी भारत का नवनिर्माण होगा। गांधीजी के दर्शन के अनेक पहलू हैं लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण उनका आध्यात्मिक दृष्टिकोण है जिसे समझकर ही हम विश्व बंधुत्व का सपना साकार कर सकते हैं। आरक्षण आंदोलन हो या नक्सलवादी आंदोलन सभी मन की अशांति की उपज है इसलिए मन को योग-ध्यान द्वारा संस्कारित करने की जरूरत है। देश की युवा पीढ़ी को समझना चाहिए कि असली ताकत बंदूक की गोली में नहीं है वह प्रेम, सद्भाव और पुरुषार्थ में है। उन्होंने एकता एवं सद्भाव गीतों को प्रस्तुत कर युवाओं में जोश भर दिया।

प्रारम्भ में डॉ. पद्मजा शर्मा ने सुब्बाराव की जीवन-यात्रा का परिचय देते हुए कहा कि युवा पीढ़ी के महानयाक हैं, युवा शिविरों में भाग लेने के पश्चात् युवा गाँव, शहर व समाज में गांधी के रचनात्मक कार्यों को प्रचारित करें। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुन्दनमल जैन ने की। समाजसेवी आशा बोथरा ने कहा, लक्ष्य अच्छे हों, साधन भी अच्छे हों तो ग्राम-स्वराज्य व विश्वशांति की कल्पना को मूर्तरूप मिलेगा। **प्रस्तुति : योगेन्द्र शरद जैन**

कदम-कदम पहरे सहती

समाज की ठैकेदारी देखी
बेटी की इज्जत हुई तार-तार
बाप बना हरदम लाचार
बलात्कारी बैठा सीना ठीक
दर-दर फिरती बेटी बेचारी
गुंडे बैठे ताक में
अबला सहमी
औरसमाज लादे गलतफहमी
प्रेम किया तो सूली चढ़ी
यौवन आया, लूट ली गयी
इज्जत की खातिर ताले में कैद,
कदम-कदम पर पहरे सहती
भाई-बाप संग भी महफूज न रहती
हर पल देखती अत्याचार
माँ जैसा त्याग सीख
ससुराल गयी
तो तीनों की तलवार सही।

—डॉ. योगेन्द्र यादव

इनकी कहानी

आग में खेती करेंगे, तन जलाकर फावड़ों से,
कौन इनकी तप्तकाया पर लगा सकता है चन्दन?
जब खड़ी अंगार ठण्डे कर किसानों की किसानी,
तब हजारों चल पड़े करने कुदालों का समर्थन।
अब किसानी ने कुदालों को कहा, "हे पूज्य अम्बे,
तुम बिना तिल भी नहीं पाता यहाँ पर एक सम्बल,
चीख पड़ते हैं किसानों के कोमल हृदयस्थल,
जब तुम्हारे बिन नहीं झरते क्षितिज से कृष्ण अम्बर।
हाँ, करुण होता हिमालय, हाँफ उठती है समष्टि
जब तुम्हारी धार पर पाषाण की लगती है ठोकर"।
है कुदालों का तमाशा देखकर हैरान दुनिया,
आज भी इनमें बसा है, यक्षपति का सब खजाना।
हम तो सुनते आ रहे इनकी कहानी,
हर समय इनके किये की ही जुबानी
ये चलीं जब-जब शिलायें तोड़कर,
प्रकृति को भी पड़ा है मन मिलाना।।
जब कुदालें हैं मचलती मातृभू पर,
अन्नदाता की यहाँ जयकार होती।।

—अनुज कुमार शर्मा 'रामानुज'

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए महामंत्री, शेख हुसैन द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा सुरभि प्रिन्टर्स, इंडियन प्रेस कॉलोनी, मलदहिया, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : बिमल कुमार। छपी प्रतियाँ : 1450